सत्याग्रह

समदोङ् लोसंग तेंजिङ

सत्याग्रह

(सत्य के प्रति निष्ठा)

समदोङ् लोसंग तेंजिङ

अनुवादक - चन्द्रचूड़ मणि

भारत तिब्बत मैत्री संघ

प्रकाशक
भारत तिब्बत मैत्री संघ
6, ब्रह्मपुत्र छात्रावास संरक्षक आवास,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली - 110067

प्रथम हिंदी संस्करण : 1000 प्रतियां, 1999

मूल्य : बीस रुपए मात्र।
(इस प्रकाशन की समस्त आय
सत्याग्रही समुदाय, सारनाथ,
वाराणसी को दी जाएगी।)

प्रकाशन सहयोग
आचार्य सामदोङ् रिंपोछे अभिनंनदन समिति, नई दिल्ली, भारत।

निम्बस, नई दिल्ली (6967823, 6863565, 6866151) द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्राक्कथन 8

तिब्बत की आज़ादी की अपरिहार्यता 11

स्वाधीन तिब्बत की मर्यादाएं 14

साधन 15

साधनों का प्रयोग मार्ग 16

सत्याग्रह आंदोलन की योजना 19

सत्याग्रही की अपेक्षित योग्यताएं 20

सत्याग्रही के प्रण 22

सत्याग्रही के ध्येय 22

सत्याग्रह के रुप 23

आंदोलन की अवस्थाएं 23

सत्याग्रह के प्रकार 24

सत्याग्रह आंदोलन की मांग 26

सत्याग्रह में आने वाली बाधाओं का पूर्वाभास 27

आंदोलन के संबंध में सूचना-संचार 28

आंदोलन का आर्थिक आधार 29

सत्याग्रह आंदोलन के समर्थक 29

सत्याग्रह के संबंध में आशंकाओं पर प्रतिक्रिया 29

परिशिष्ट

1. *तिब्बती जनता द्वारा प्रस्तावित सत्याग्रह* 33

2. *सत्याग्रह हेतु विचारणीय विषय* 42

सत्याग्रह बहुत कोमल वस्तु है, वह कभी किसी को चोट नहीं पहुँचाता। क्रोध या द्वेष से प्रेरित होकर सत्याग्रह नहीं करना चाहिये। उसमें छोटी मोटी बातों को भी तूल नहीं दिया जाता, अधीरता से काम नहीं लिया जाता, व्यर्थ का शोरगुल नहीं मचाया जाता। यह जबरदस्ती ठीक उलटी चीज है। इसकी परिकल्पना हर तरह से हिंसा का स्थान लेने के लिये की गयी थी।

-मोहन दास करमचंद गाँधी, हरिजन 15 अप्रैल 1933

हर महान कार्य में उसके लिये समर्पित व्यक्तियों की संख्या की बजाए उनका चरित्र और गुण ही निर्णायक होता है। विश्व के महानतम मनुष्य अपने आदर्शों के लिये हमेशा अकेले आगे आए हैं।

-मोहन दास करमचंद गाँधी, यंग इंडिया, 10 अक्टूबर 1929

सत्याग्रह (सत्य के प्रतिनिष्ठा)

भूमिका

तिब्बत पर साम्यवादी चीनियों द्वारा किये गये दमनात्मक और क्रूर आक्रमण के परिणाम स्वरुप तिब्बत में चीनियों का अनैतिकतापूर्ण शासन स्थापित हुआ है जो अन्तर्राष्ट्रीय कानून और तिब्बतवासियों की इच्छा के सर्वथा प्रतिकूल है। यदि तिब्बत की राष्ट्रीयता की पहचान बनाये रहते हुए तिब्बत के ज्ञान के अद्वितीय श्रोतों में समाहित शास्त्रों और उसकी सांस्कृतिक परंपराओं के साथ तिब्बत का अस्तित्व मानव जाति के लिये उपयोगी है और यदि ऐसा माने कि उन सामाजिक परम्पराओं का निर्वहन, नैतिक आचरण और सद्व्यवहार के विकास के लिये आवश्यक है तो तिब्बत की आजादी एक अनिवार्यता है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। तिब्बत की स्वतंत्रता का लोप तिब्बतवासियों की भूलों का परिणाम है। इसके लिये भी तिब्बत वासी स्वयं जिम्मेदार हैं कि चीन ने आज भी तिब्बत पर अवैध रुप से कब्जा जमा रखा है। अत: तिब्बत की खोई आजादी को हम तिब्बतवासी ही वापिस ला सकते हैं। हमें ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिए कि हम दूसरों की सहायता से आजाद हो जायेंगे और इसी तरह हमें ऐसे दिवा स्वप्न के मोहजाल में भी नहीं रहना चाहिये कि स्थिति में बदलाव अवश्य आयेगा। आज तिब्बत एक गंभीर परिस्थिति में आ फंसा है और हम कई अन्य देशों की तरह अपनी स्वाधीनता के संघर्ष की सफलता की प्रतीक्षा में अनेक वर्ष यों ही नहीं बिता सकते।

हमें परमपावन दलाईलामा का अमूल्य नेतृत्व प्राप्त है जिनके संकेत पर तिब्बती के लोगों ने और प्रवासी तिब्बती सरकार ने विविध प्रकार के आन्दोलन चलाये हैं और जिनके द्वारा उन्हें महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग मिला है। फिर भी पिछले अनेक वर्षों में तिब्बत और चीन के बीच शान्तिपूर्ण विचार विनिमय के प्रयत्नों में परमपावन को सफलता नहीं मिल सकी जिसके विकल्प में उन्होंने कई अवसरों पर तिब्बत के जनादेश के पक्ष में अपना अभिमत व्यक्त किया है। उसी के द्वारा वे हमारे भावी कार्यक्रम निर्धारित करना चाहते हैं। यह प्राय: सुनिश्चित है कि वह शीघ्र जनादेश का सुझाव प्रस्तुत करेंगे। हम तिब्बत वासियों

को न केवल इस संबन्ध में अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिये तैयार रहना है, बल्कि तिब्बत की गंभीर परिस्थिति को देखते हुए एक दिन की देर भी हमें गवारा नहीं है। इस स्थिति में यह हमारा संकल्प होना चाहिये कि जितनी जल्दी हो सके हम एक आन्दोलन का शुभारंभ करें। उसका जो भी परिणाम हो उस पर हमें किसी तरह के मतवाद या स्थिति की समीक्षा और अनुकूल परिणाम की आशा का दास नहीं बनना है। अतएव मैं यहां आप के सामने अपने सारे चिन्तन और पिछले पैंतीस वर्षों के अनुभवों का निष्कर्ष रख रहा हूँ। यह अहिंसक आन्दोलन की एक सुस्पष्ट योजना है जिसे 'सत्याग्रह' (सत्य के प्रति निष्ठा) की संज्ञा देनी चाहिये और यह मेरा अपना विनम्र सुझाव है। यह आवश्यक नहीं कि सभी लोग उससे सहमत हों। मैं तार्किक युक्तियों से लोगों को आश्वस्त नहीं करना चाहता। फिर भी यदि कोई ऐसे निष्पक्ष व्यक्ति हों जो तिब्बत की आज़ादी की आवश्यकता समझते हैं और जिन्हे सत्य और अहिंसा के मार्ग में विश्वास है तो उन्हें मेरे सुझावों में सार्थकता दिखाई देगी और वे इनमें रुचि रखने लगेंगे। ऐसे व्यक्तियों का मैं हृदय से स्वागत करुँगा। मुझे विश्वास है कि ऐसे लोग सामने आ कर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से इस सत्याग्रह आन्दोलन में हिस्सा लेंगे।

यद्यपि परमार्थ का लक्ष्य रहा है दूर अभी भी-
जिस तक पहुँच न पाया;
फिर भी नहीं चाहता कोई जीव सताया जाये मुझसे।
तिब्बत की आज़ादी जिससे हो कल्याण जगत का
निर्भर नहीं पराश्रय पर वह,
हमें स्वयं ही मार्ग बनाना होगा निश्चय।
साधारण जन के मन का यह विचार है
जिसने हिम की देव-भूमि में सबसे पहले आँखें खोली
अधिक समय है बीत चला मेरे जीवन का
भारत की इस पवित्र धरा पर।
धर्म-मार्ग की दीक्षा लेकर
आ पहुँचा हूँ राजनीति में
जन्म-जन्म के कर्म फलों की है यह परिणति।
आशा नहीं मुझे वैभव की या कोई पद पाने की

नहीं हमारे शत्रु कहीं पर
जिन्हें पराजित करके यश मैं पाऊँ
कौन हमारे मित्र
बचाने जो आयेंगे।
मैं चिर पथगामी,
राजनीति का मार्ग नहीं है मेरा
विश्व शान्ति का एक पुजारी हूँ मैं केवल-
उसी व्यथा से पीड़ित हैं ये मेरे स्वर।

प्राक्कथन

तिब्बत वह भूमि है जिसके निवासी सहज भाव से शिष्ट, जल्दी उत्तेजित ने होने वाले और अधिकतर दयालु हैं और जिसकी संस्कृति धर्म और नैतिकता से अनुप्राणित है। तिब्बत ऊँचे शैल श्रृंगों से घिरा हुआ, सुरम्य जलधाराओं से युक्त, ठंडी हवाओं, दूर तक घास के मैदानों, वनस्पतियों और जंगलों से एक विविधता पूर्ण मनोहारी प्राकृतिक पर्यावरण का सृजन करता है। राजनीतिक दृष्टि से प्राचीन काल के लिखित वृत्तान्तों से लेकर 1951 तक तिब्बत एक पूर्ण प्रभुसत्तात्मक राष्ट्र रहा है। यद्यपि ऐसे अवसर भी आये तिब्बतियों में राजनीतिक दावपेंच के अभाव और उनकी राजनीतिक दूरदृष्टि की कमी के कारण जबकि बाह्य दृष्टि से उसे चीन के नियन्त्रण में समझा गया। एक बात और भी है कि राजनीतिक मामलों में हमारे अबोध बने रहने से चीनियों ने दोहरा लाभ उठाया और अपनी साम्राज्यवादी ताकत को हम पर ला थोपा जिसके द्वारा हम उनके भुलावे और वंचना-मय प्रवृत्तियों के शिकार बन गये। वास्तविकता तो यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार तिब्बत कभी भी चीनी नियंत्रण में नहीं रहा फिर उसका कोई भाग कैसे हो सकता है? तेरहवीं शताब्दी में जब छोग्येल फग्पा ने तिब्बत का शासन सूत्र अपने हाथ में लिया उस समय से लेकर तिब्बत पर साम्यवादी चीन की हिंसात्मक चढ़ाई (1951) के बाद मज़बूरी में सत्रह सूत्रीय समझौते पर हस्ताक्षर किये जाने तक तिब्बत एक स्वतन्त्र देश बना रहा।

चीन में साम्यवादी सरकार का गठन होते ही चीनियों ने अन्तरर्राष्ट्रीय विधान और नैतिक मूल्यों को एक तरफ रख कर तिब्बत पर दुर्धर्ष आक्रमण किया था। आक्रान्ता की अपरिमित संख्या और योजना बद्ध तैयारियों के आगे तिब्बत वासियों को हार का सामना करना पड़ा और उनका देश चीनियों के हाथ में चला गया। इस स्थिति के मूल कारण कुछ इस प्रकार हैं। तिब्बत के लोग धीरे धीरे अपने स्वाभाविक विवेक और उस ही मर्यादा को खोने लग गये थे और अहिंसा एवं कर्मफल के सिद्धान्त के अनुपालन से उनका विश्वास डगमगाने लगा था। धार्मिक निकायों के अनेक सदस्य अपने नैतिक स्तर से गिर चुके थे और जनता के बीच एवं निजी तौर पर ऐसी बातों में उलझने लगे थे, जैसे व्यवसायिक क्रय विक्रय, लाभांश प्राप्त करने की होड, महाजनी(हुंडी व्यापार), वित्तीय

मामले तथा अन्य ऐसे विषय जिनका अध्यात्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। जो वास्तव में धार्मिक थे उन्हें समाज में ऊँचा स्थान नहीं प्राप्त था और अधिकतर वही लोग शासन के भीतर और बाहर दायित्व संभाले बैठे थे जिनका अध्यात्म से सरोकार नहीं था। संक्षेप में कहें तो जिन लोगों ने हमारे अध्यात्मपरक राष्ट्रीय विधान और नैतिक आचार विचार को क्षति पहुँचायी थी उन्हीं का समाज में बोलबाला था और हमारे बहुत से जननायक अनैतिकतापूर्ण व्यवहारों के अधीन केवल अपनी स्वार्थ लिप्सा में व्यस्त थे। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि तिब्बत के अधिकांश नागरिकों में अपने देश और सरकार के प्रति निष्ठा, प्रेम और बलिदान की भावनाएँ नहीं रह गईं। दुनियाँ यह जानती थी कि तिब्बत एक आध्यात्मिक देश है जबकि तिब्बत के मठों (विहारों) में अस्त्र-शस्त्र और मार पीट के सामान एकत्र किये जा रहे थे तथा भिक्षुओं को अनायास हिंसात्मक संयोजनों में फंसना पड़ रहा था। इस प्रकार की स्थितियों और घटनाओं से अध्यात्म की समझ-परख रखने वालों को आश्चर्य होता है और उन परिस्थितियों पर अगर कोई सावधानी के साथ गौर करे तो उसे यह बात समझ में आ सकती है कि तिब्बत की स्वाधीनता के विनाश का कारण उसकी आन्तरिक परिस्थिति ही थी-विदेशी सैनिक आक्रमण तो बहाना मात्र था।

इस तरह हम देखते हैं कि जब हमारे अकुशल कर्मों के फलागम का समय आया उस समय हम तिब्बत वासियों ने चालीस साल से अधिक समय तक तरह तरह की अप्रत्याशित और विषम यन्त्रणायें सहीं। चीनियों की हिंसात्मक दमननीति के कारण कम से कम बारह लाख तिब्बतियों ने अनेक तरह की यन्त्रणाओं और अत्याचारों के बीच अपनी जानें गवाईं। हजारों धर्म संस्थाएं और प्राचीन कलावशेष नष्ट किये गये और इस प्रकार के संगठित प्रयास किये गये जिससे हमारे धर्म और संस्कृति की जड़े उखाड़ फेंकी जा सकें। हमारे वन और खनिज संसाधन क्षतिग्रस्त किये गये और तिब्बत के पर्यावरण को प्रदूषण और असंतुलन की दयनीय स्थिति में लाकर उजाड़ बना दिया गया। झंझावात की तरह व्याप्त दुःख समुदाय के ये अविरल अनुभव हमारे अपने ही सामूहिक कर्म के परिताप हैं; उनके लिये और कोई दोषी भला कैसे हो सकता है?

इसका राजनीतिक पक्ष यह है कि तिब्बत वासी और विशेष रुप से वह वर्ग जिसके हाथ में ताकत थी, राजनीतिक सूझ बूझ और दूरदर्शिता में कच्चे थे। परिणाम स्वरुपः 1. समय और परिस्थितियों के साथ हम तिब्बत की राजनीतिक

प्रणाली में परिवर्तन नहीं ला सके। 2. हम अन्तरर्राष्ट्रीय संबन्ध बनाने में अक्षम रहे जिसके द्वारा संसार के राष्ट्रों के बीच अपनी राष्ट्रीयता को रेखांकित कर सकते। 3. हमने 1913 से लेकर 1949 के बीच अनेक अमूल्य अवसर खो दिये और अन्तरराष्ट्रीय समुदाय से कटे रह गये। 4. आन्तरिक राजनीतिक स्थिति पर समुचित नियंत्रण न होने के कारण जनता की सोच और एकता एवं देशप्रेम की आवश्यक क्षमता एक सीमा के भीतर सिकुड़ कर रह गई। 5. हमारे पड़ोसियों जैसे भारत ने हमारे साथ सहकार के लिये अपनी इच्छाएँ व्यक्त की परन्तु हम उन्हें इस बात से आश्वस्त करते रहे कि हम अपना शासन चलाने में स्वयं समर्थ हैं। इन प्रारंभिक दशाओं से पूरा लाभ उठाते हुए चीन हम पर सरलता से आक्रमण कर सका और तिब्बत को अधीन कर लिया। एक विशेष बात यह भी देखी गई कि तिब्बत वासी अपने देश की रक्षा कहाँ तक कर पाते जबकि कई लोगों ने चीनियों को आवास, भोजन, यातायात आदि की सुविधाएँ भी प्रदान कीं। चीनी धन और सामान को ग्रहण करने में हमें कोई आपत्ति नहीं हुई। इसके तहत बहुत से तिब्बतियों ने बिना झिझक के धन एवं सामान और अपने लघुस्वार्थों के निमित्त (जिनमें अनेक व्यक्तिगत छोटे मोटे प्रतिशोध के भाव भी सम्मिलित थे) देश को बेच दिया। इन बेशर्म देशद्रोही क्रिया कलापों के कारण तिब्बत नितान्त कमजोर पड़कर चीनियों का शिकार बना। भारत जैसे अन्य देश अन्तरराष्ट्रीय जगत में तिब्बत को प्रत्यक्ष समर्थन नहीं दे सके। हम तिब्बत वासी इस परिस्थिति के स्वयं जिम्मेदार हैं। हमे यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि चीनियों द्वारा तिब्बत का अधिग्रहण और तिब्बत की भूमिपर बहुत से चीनियों के बसाए जाने की प्रक्रिया प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षरुप से तिब्बत वासियों का चीन को बराबर सहयोग और समर्थन देने का परिणाम है। अतएव इस परिस्थिति से छुटकारा पाने के लिये हम तिब्बतियों को ही आज आगे आना होगा। केवल दूसरों की सहायता या बाहय अवदानों से तिब्बत को आज़ादी मिलने वाली नहीं है। इस लिये सभी तिब्बतियों को एक मन और हृदय से साहस पूर्वक एक सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित हो जाना चाहिये जो हमारे सत्य का सार्थक उपाय है। सत्य की सदा विजय होती है और हमारे साथ है सत्य।

हम विवेक के साथ कह सकते हैं कि यह केवल तिब्बती समाज की ही नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव समुदाय की समस्या है कि हमारे दुःख और क्लेश अहिंसा के शान्ति मार्ग का निष्ठा पूर्वक अनुगमन न करने के कारण हैं। तिब्बत

वासियों के अनुभव में जो समस्याएँ आई हैं वे सामान्य सिर दर्द से लेकर अपनी संपूर्ण आज़ादी के खोये जाने तक सभी हमारे पिछले कठोर कर्मों के परिणाम हैं। अतः क्लेश के इस जंजाल से निकलने का एक मात्र उपाय अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करना ही है जिससे हम अपनी पिछली क्रूर वृत्तियों से छुटकारा पा जाएं। यदि हम ऐसा नहीं करते और क्रोध और घृणा के कारण उत्पन्न हिंसात्मन कार्यवाहियों में लगते हैं तो हम निःसन्देह अपने लिये भावी क्लेशों का जाल बुनेंगे। यथार्थ तो यह है कि हिंसा के द्वारा क्लेश के निवारण का कोई प्रश्न ही नहीं है। हम चीनियों की आलोचना करते हैं कि उन्होने हमें बहुत दुःख दिया है, परन्तु हम भी यदि उन्हें दुःख देने का सोंचे तो किस मुँह से हम चीनियों की आलोचना कर सकेंगे? अतः परमपावन दलाई लामा जी ने हमे यह बार बार समझाने का प्रयत्न किया है कि अगर सच्चे हृदय से शान्ति के अहिंसा मार्ग को अपनाते हैं और उस में निष्ठा रखते हैं तो हमें अपनी आज़ादी पा लेने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

सभी तिब्बत वासियों से हमारा यह अनुरोध है कि वे चाहे तिब्बत में हों या प्रवास में दिन काट रहे हों एकजुट हो कर तत्काल तिब्बत की आजादी के लिये शान्ति पूर्वक अहिंसा मार्ग पर चल कर सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित हों। हमें इस आन्दोलन के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ अपने मन में एक सुनिश्चित योजना को आकार होगा। मैं उस कार्य योजना की रुपरेखा के विषय में कुछ संक्षिप्त विमर्ष रख रहा हूँ जो ऐसे आन्दोलन के लिये उपयोगी सिद्ध होगा और जिसके आधार पर योजना बनाई जा सकती है।

1. तिब्बत की आज़ादी की अपरिहार्यता

तिब्बत को आज़ादी ऐसा विचार है जो राजनीति से प्रेरित नहीं है और न इसका आधार राष्ट्रीय सरकार का सिद्धान्त है। हमारा संघर्ष मूलरुप से एक जातीय अथवा राजनीतिक संघर्ष नहीं है। प्रत्युत, तिब्बत जैसे आध्यात्मिक देश में उत्पन्न सब लोगों का प्राणिमात्र के प्रति एक सार्वभौम दायित्व है जिसका निर्वहन एक ऐसा कर्तव्य है जिसका संबन्ध हम सभी के इस देश में जन्म लेने से है। हम यदि इस जन्मजात कर्त्तव्य का पालन नहीं करते तो हम तिब्बती कहलाने के अधिकारी नहीं हैं और अपनी सामान्य क्रियाओं से हम अपनी विरासत के प्रति ईमानदार भी नहीं हैं। इसने जन्मजात कर्त्तव्य का पालन न

करना केवल जघन्य अपराध ही नहीं है, बल्कि दुनियादारी की नज़र से भी जिन मानवीय योग्य वस्तुओं को हम भोग रहे हैं उसके भी अधिकारी नहीं हैं। आइये, जिस दायित्व की चर्चा मैं कर रहा हूँ उसे समझें।

हमारा यह दायित्व है कि हम अपने अद्वितीय पुराशास्त्रों और सांस्कृतिक परंपराओं की धरोहर को संरक्षित कर उनका संवर्धन करें। उस धरोहर के पीछे तिब्बत देशवासियों की पुरानी पीढ़ियों के अथक प्रयत्न रहे हैं जिन्होंने उसके परिरक्षण और विकास को अपने जीवन से अधिक मूल्यवान समझा। आज के युग में भी वे परंपरायें हमारे संपूर्ण समाज का अविभाज्य अंग बनी हुई हैं। तिब्बत के लोग अगर उन सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा नहीं कर पाते और चीनी अधिग्रहण के परिणाम स्वरुप वे छिन्न भिन्न हो जाती हैं तो वह केवल तिब्बतियों के लिये ही नहीं बल्कि सारे जगत के लिये महान क्षति होगी। इस विरासत को बचाये रखना तिब्बत की आजादी द्वारा ही संभव है और उसके साथ वहाँ शोषण रहित पर्यावरण में संतुलन बनाये रखना एक दूसरी शर्त है। अतः हमारा अन्तिम ध्येय केवल तिब्बत को राजनीतिक दृष्टि से आज़ाद करवा लेना भर नहीं है। प्रत्युत, हमारा अन्तिम ध्येय तिब्बत देश के शास्त्रीय विचारों की सुन्दर और स्वस्थ सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा एवं उनका परिरक्षण और प्रसार है जिसकी संपूर्ण विश्व को आवश्यकता है। यह नितान्त तर्कसंगत है कि उचित संसाधनों और अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में हम उस दायित्व को पूरा नहीं कर सकते। इसलिए हमें तिब्बत की मुक्ति की आध्यात्मिक साधना का कार्यारंभ कर देना चाहिये।

केवल राजनीतिक अभिप्रायों को लें तो हम देख सकते हैं कि तिब्बत जातीय तत्व, भाषा, दर्शन और साहित्य आदि सभी विषयों में चीन से भिन्न है। तिब्बती संस्कृति का कोई ऐसा महत्वपूर्ण अंग नहीं है जो चीन से भिन्न न हो। इतिहास की दृष्टि से तिब्बत 1949 के आरंभ में किये गये चीनी आक्रमण से पूर्व एक सर्वथा स्वतंत्र देश रहा है। आज भी किसी तिब्बती को चीनी शासन स्वीकार्य नहीं है। इन्हीं सब कारणों से हमें अपने देश की स्वाधीनता प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है।

इसके सातत्य में अन्तरर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भी एशिया के दो सघनतम जनसंख्या वाले देशों-भारत और चीन के बीच एक शांति-राज्य की उपस्थिति से क्षेत्रीय शान्ति के उन्नयन में सहायता ही मिलेगी। भौगोलिक दृष्टि से तिब्बत

संसार का उच्चतम धरातल पर स्थित देश है और एशिया की सभी बड़ी नदियों का उद्‌गम स्थल भी। इस लिये तिब्बत का पर्यावरण एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का विषय है। वह सभी पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सुरक्षा और स्थायित्व की दृष्टि से निकट से जुड़ा हुआ है। उन राष्ट्रों में भारत, नेपाल, भूटान और म्यानमार (बर्मा) मुख्य रुप से आते हैं। यह सोचने की बात है कि तिब्बत की आजादी चीन के लिये अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगी। संक्षेप में यदि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ऐसा समझते है कि ईराक का कुवैत पर कब्जा करना न्याय विरुद्ध है तो इस में भी कोई विवेक की बात नहीं है कि चीन तिब्बत को अपने कब्जे में लिये रहे। चीन के पंजे से जबतक तिब्बत नहीं छूट जाता वर्तमान सभ्यता के विकास पर कलंक का धब्बा बना रहेगा और इक्कीसवीं सदी में भी जंगल के कानून की बर्बरता कायम रहेगी।

अतएव, तिब्बत की आज़ादी का महत्व केवल तिब्बतियों के लिये नहीं है, बल्कि उस की सार्थकता समस्त अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के लिये है जिसे उससे स्पष्ट लाभ मिलने वाले हैं। इस संदर्भ में यह विचारणीय है कि दूसरे देशों के स्वाधीनता संग्राम से तिब्बत के आजादी का संघर्ष इसलिये भिन्न है कि हम उसके लिये अनेक पीढ़ियों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते। हमें बड़ी तत्परता के साथ इसे एक तात्कालिक अनिवार्यता मानकर इस संघर्ष में कूद पड़ना चाहिये। यहाँ पर मैं कुछ ऐसे तर्क उपस्थित कर रहा हूँ जो इसका संकेत देते हैं कि हमारा समय कितना मूल्यवान है और हर बीते हुए दिन के साथ उसका कोष रिक्त होता चला जा रहा है।

1. हमें अपनी आजादी शीघ्र प्राप्त नहीं होती तो तिब्बत को चीनियों का देश बनाने में अधिक समय नहीं लगेगा और तिब्बत के लोग अपने ही देश में एक अल्प-समुदाय बन कर रह जायेंगे। तिब्बत की मुक्ति के लिये आध्यात्मिक साधना का आन्दोलन इस लिये छेड़ा जा रहा है कि तिब्बती वाङ्मय, संस्कृति और तिब्बत के शास्त्रों में निहित दर्शन और विविध अभ्यास क्रमों को हम बचा सकें। इस कार्य में हम थोड़ी भी ढिलाई बरतेगें तो ये सभी स्पृहणीय वस्तुएँ समूल नष्ट हो जायेंगी। उसके बाद तिब्बत आजाद होता है तो उसकी आजादी अपनी अपनी अधिकांश सार्थकता खो चुकी होगी और वह केवल राजनीतिक आजादी बन कर रह जाएगी।

2. आजादी मिलने के बाद कुछ समय तक हमें अगर चौदहवें दलाई लामा

जी का निरन्तर निर्देशन नहीं मिलता रहेगा तो यह निश्चित है कि हम अपने लक्ष्यों के अनुरुप एक नये तिब्बत का निर्माण नहीं कर सकते और यह भी संभव है कि हम अपनी आजादी को कायम भी न रख सकें।

3. तिब्बत की आजादी को हम कुछ वर्षों के भीतर अगर नहीं ले लेंगे और साम्यवादी चीन आर्थिक दृष्टि से विकसित होता रहा तो वह राजनीतिक दृष्टि से इतना सुदृढ़ हो जायेगा कि प्रायः दस वर्षों के भीतर वह एक ऐसी शक्ति बन जायेगा जो किसी भी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर सकेगा। यही नहीं चीन अगर एक लोकतान्त्रिक और शान्तिपूर्ण देश बन जाता है तो तिब्बत की आजादी एक और दुर्गम समस्या बन जायेगी। ऊपर गिनाये गये कारणों को ध्यान में रखते हुए तिब्बत की स्वाधीनता के लिये की गयी आध्यात्मिक साधना बहुत थोड़े समय में ही शुभ परिणाम दिखायेगी जिसे तात्कालिक लक्ष्य मानते हुए हम एक व्यापक सत्याग्रह आन्दोलन का प्रारंभ कर सकेंगे।

2. स्वाधीन तिब्बत की मर्यादाएं

परम पावन दलाई लामा की शुभ दृष्टि में भविष्य में आजादी मिलने के बाद तिब्बत एक सैन्यरहित अहिंसा क्षेत्र के रुप में उभरेगा-जहाँ पारमाणविक, रासायनिक और जैविक शस्त्रास्त्रों का कोई चिन्ह नहीं रहेगा। संरक्षित पर्यावरण का वह एक केन्द्र होगा जहाँ सभी प्रकार के अन्तों को छोड़ कर अर्थव्यवस्था के बौद्ध सिद्धान्त प्रचलित किये जायेंगे। आज़ाद तिब्बत अद्वितीय सारगर्भित शास्त्रीय संस्कृति का उद्‌गम बन जायेगा जिसमें आधुनिक समाज की नाना विसंगतियों से उत्पन्न क्लेशों का प्रहाण हो जायेगा। वह एक विशेष कोटि का आध्यात्मिक और अपने संपूर्ण अर्थों में लोकतांत्रिक राष्ट्र होगा जिसमें प्राचीन तिब्बत की वे सभी मर्यादाएं स्थापित की जा सकेंगी जो सारी वसुधा को एक बड़ा कुटुम्ब मान कर चलती हैं और जिनमें सबके प्रति प्रेम और सदस्यता के भाव विद्यमान हों। प्राचीन मर्यादाओं की स्थापना से आधुनिकता के क्रियमाण स्वरुप की उन मर्यादाओं के सदाशयता पूर्ण सिद्धान्तों से किसी संघर्ष की गुंजाइश नहीं है। आज़ाद तिब्बत एक ऐसी आदर्श राजनैतिक प्रणाली का संचार करेगा जिसके द्वारा विश्व में शान्ति और कल्याण के वातावरण को प्रश्रय मिलेगा। एशियाई देशों के लिये तो वह एक वरदान ही होगा। ऐसे भावी तिब्बत के निर्माण के लिये ही हमें प्रयत्नशील होना है।

3. साधन

तिब्बत की स्वाधीनता के लिये जिस प्रकार की आध्यात्मिक साधना में हम लगे हुए हैं उसके साधन सर्वशः अहिंसा और शान्ति है। अतः सभी तिब्बत वासियों को, वह तिब्बत में हो अथवा प्रवास में रह रहे हों, शान्ति के अहिंसात्मक मार्ग में निष्ठावान रहकर उन्हें अपने आचरण में उसी मार्ग का अनुसरण करना चाहिये। शान्ति का अहिंसा मार्ग एक ऐसी नीति है जो विशेष रुप से साहसी और उद्यमी व्यक्तियों के लिये है। इस में संदेह नहीं है कि कायर और बुजदिलों के लिये तो उसकी कल्पना भी दुस्तर है। ऐसे लोग भी जो शास्त्रीय उपदेशों और हेतु परिणाम वाद के कर्म सिद्धान्त की सार्थकता में विश्वास नहीं रखते इन सिद्धान्तों की नीति को जल्दी नहीं समझ सकते। बहुत से सरल लोगों का यह खयाल है कि अगर हम शान्ति के अहिंसा मार्ग का अनुगमन करते हैं तो केवल इस लिये कि चीन की विशाल जनसंख्या और सामरिक शक्ति के आगे हम तिब्बतियों के सामने और कोई चारा भी तो नहीं है, क्योंकि तिब्बती संख्या में अल्प तथा सामरिक शक्ति में कमज़ोर हैं। इस तरह का विचार रखने वाले व्यक्ति ऐसा समझते हैं कि अगर चीन से युद्ध करने की हममें क्षमता होती तो यह मानना होगा कि सैन्य संचालन के द्वारा हम अपने देश को आज़ाद कर लेते। यह स्पष्ट है कि यह मत इसका संकेत है कि अहिंसा के शान्ति मार्ग में उनका तनिक भी विश्वास नहीं है। इस तरह का मत रखने वालों की संख्या काफी है परन्तु इसे उनकी मिथ्या धारणा ही समझना चाहिये। कर्म के हेतुफल सिद्धान्त में किसी को विश्वास हो या न हो लेकिन इसमें यही बतलाया गया है कि पुण्य कर्मों का परिणाम सुख देने वाला और अकुशल कर्मों का परिणाम दुःखद होता है। वर्तमान स्थिति को विशुद्ध राजनीतिक दृष्टि से आँकने की चेष्टा करते हुए भी इस तरह के विचारों में अन्तर निहित दार्शनिक तत्व केवल यह है कि निर्दोष लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये दोषपूर्ण साधन नहीं अपनाये जाने चाहिये। अहिंसा के शान्ति मार्ग पर चलने के लिये हमें इस दार्शनिक तत्व का विचार मन में बराबर बनाये रखना चाहिये, क्योंकि यह एक ऐसी समझ है जिससे हम हर तरह की हिंसा से बाल-बाल बचे रह सकते हैं। परन्तु ऐसा न करके हम यदि दूसरों को धोखा देने के लिये अहिंसा का प्रयोग करते हैं तो यह कहीं अच्छा होगा कि ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग इस आन्दोलन में हिस्सा न लें।

अगर हिंसा के द्वारा कल ही तिब्बत की आज़ादी का आश्वासन मिलता है तो उस दशा में भी हमे हिंसा के मार्ग को भूल कर भी नहीं अपनाना चाहिये। ऐसी प्रतिज्ञा जबतक हम नहीं करते तबतक अहिंसा का मार्ग अधूरा रह जाता है और हमारे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये किसी तरह एक शक्तिशाली साधन नहीं बन सकता।

4. साधनों का प्रयोग-मार्ग

ऐसा देखा जाता है कि किसी विश्वसनीय अहिंसात्मक शान्ति आन्दोलन के लिये उसका सत्य पर आधारित होना अनवार्य है। एक प्रकार से सत्य और अहिंसा पर्यायवाची हैं। अत: देखना यह है कि अहिंसा के शान्तिमार्ग का सहारा हम तिब्बत की आध्यात्मिक मुक्ति साधना के लिये ले सकें। इसपर लोगों को आश्चर्य भी हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि हम यह मानकर चलते हैं कि सत्य हमारे पक्ष में है और उसके इस परिज्ञान द्वारा हम एक सत्याग्रह आन्दोलन चलाने जा रहे हैं। इस विचार को मन में रख कर मैं यहाँ सत्य के प्रासंगिक अंगों को उपस्थित कर रहा हूँ :-

1. यह सच है कि तिब्बत एक अध्यात्मपरायण देश है जहाँ लोग आध्यात्मिक और नैतिक ढ़ंग से अपनी जीविका अर्जित करते हैं।

2. यह सच है कि जबसे प्रारंभिक सामाजिक निकायों की स्थापना हुई उस समय से लेकर 1951 तक के लम्बे समय में तिब्बत देश पूर्णत: स्वाधीन था।

3. यह सच है कि तिब्बत पर 1949 की चीन की सामरिक चढ़ाई और उसके परिणाम स्वरुप उपनिवेशवाद की स्थापना से अन्तर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन हुआ।

4. यह सच है कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दृष्टि से तिब्बतियों के साथ उन्हें संत्रसित कर उनसे सत्रह-सूत्रीय समझौते पर अत्यन्त विवशता की स्थिति में हस्ताक्षर करवा लेना वैध नहीं है। वह केवल अवैध ही नहीं है बल्कि स्वयं चीनियों ने भी उस शर्तनामें की एक भी शर्त का अनुपालन नहीं किया और ऐसा करके प्रभावकारी ढंग से समझौते को तोड़ दिया है। इस तरह यह बात साफ हो गई कि सत्रह-सूत्रीय समझौता(1951) एक वैध दस्तावेज नहीं है जिसके आधार पर तिब्बत को चीन का अंग माना जा सके।

5. यह सच है कि चीनी आक्रमण से लेकर पिछले चालीस वर्षों से अधिक समय में तिब्बती अपने मानवाधिकारों से वंचित रखे गये हैं। तिब्बत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को तहस नहस किया गया है। तिब्बत के आर्थिक संसाधनों का शोषण किया गया है। तिब्बत के लोगों पर बड़े बड़े जुर्म ढाये गये हैं और उन्हें अनेक क्रूरताओं के द्वारा दमित किया गया है। तिब्बतियों की जनसंख्या में दिनोदिन कमी आती जा रही है जिसका कारण चीनियों का तिब्बत में सोद्देश्य जन-स्थानान्तरण है। हमारी संस्कृति और हमारी अपनी पहचान को मिटाने की दुरभिसंधि जारी है; और तिब्बत के पर्यावरण को बुरी तरह क्षति पहुँचाई गई है। यह सच है कि इन अत्याचारों के परिणामस्वरुप तिब्बत के लोगों पर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है। जहाँ खुशियों के लिये कोई अवसर नहीं बचा है। इस तरह हम देखते हैं कि तिब्बत पर जिस तरह का शासन थोपा गया है उससे तिब्बतियों की जनाकांक्षा को कुचल कर रख दिया गया है।

6. यह सच है कि तिब्बत की अधिकांश जनता चीनी शासन के खिलाफ है और अपने भीतर वह तिब्बत की आज़ादी के लिये पीड़ा भरी आकुलता का अनुभव कर रही है।

7. यह सच है कि तिब्बत चीन का भाग नहीं है और इसके अलावा कि चीन ने तिब्बत पर अनाधिकृत रुप से कब्जा कर रखा है न तो तिब्बत के शासनाध्यक्ष और न तिब्बत वासियों ने स्वयं कभी चीनियों के स्वामित्व को स्वीकार किया है। इस परिस्थिति में तिब्बत को एक अन्यायी शासन मुक्त कराने के आन्दोलन से चीन की सीमा की अक्षुणता पर आँच नहीं आती।

8. यह सच है कि हम तिब्बतवासी एक पृथक राष्ट्र हैं जिन की अपनी जातिगत पहचान, भाषागत विशिष्टता, पारंपरिक वेशभूषा और सांस्कृतिक परंपराएं हैं। अतः यह सच है कि तिब्बत के लोगों को स्वायत्त शासन का अधिकार है और इस अधिकार को साफ तौर से समर्थन मिला हुआ है। इसके लिये संयुक्त राष्ट्रसंघ के 1961 और 1965 के प्रस्ताव साक्षी हैं। इसी तरह राष्ट्रों के स्थायी अधिकरण (ट्रिबुनल) का निर्णय, तिब्बत का सच (स्ट्रासबर्ग, फ्रांस, 1992) अन्तर्राष्ट्रीय विधिवेत्ताओं के सम्मेलन (लंदन, 1993) में आयोजित तिब्बत के स्वायत्ताधिकार एवं स्वाधीनता के संबन्ध में आयोजित सत्र की विवरणिका, यूरोपीय सांसदों के सम्मेलन की कार्यवाही से संबन्धित वक्तव्य

(पैलेस ऑव वेस्टमिंस्टर, 1993) तथा तिब्बत के सम्बन्ध में नई दिल्ली में आयोजित विश्व सांसदों के सम्मेलन का घोषणापत्र (नई दिल्ली 1994) में हमारे स्वायत्ताधिकार को न केवल मान्यता ही प्राप्त हुई थी बल्कि इस संबन्ध में अनेक विद्वानों ने विविध स्पष्ट और सारगर्भित वक्तव्य दिए हैं। यह सच है कि अन्तरर्राष्ट्रीय कानून में एक स्वतंत्र राष्ट्र के विषय में दी गई सारी परिभाषाएं हम तिब्बत वासियों के स्वतन्त्र अस्तित्व का बोध कराती हैं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि हमें स्वराज्य का अधिकार प्राप्त है।

9. यह सच है कि तिब्बत वासियों का संसार के प्रति यह दायित्व है कि वह अपने नैतिक आचार विचार और शास्त्रीय परंपराओं की रक्षा, उनके परिरक्षण तथा प्रसार पर ध्यान दे। क्योंकि वह अपने ढंग की मानव हितकारी दुर्लभ-परंपराएं हैं।

10. यह सच है कि उक्त दायित्व का निर्वहन तिब्बत वासियों की स्वाधीनता पर ही अवलम्बित है। अतएव यह एक निर्विवाद सत्य है कि तिब्बत को आज़ाद कराना प्रत्येक तिब्बतवासी का जन्मसिद्ध कर्त्तव्य है।

सत्य के उपरिलिखित तत्व केवल प्रमेय नहीं है और नहीं वे किसी प्रकार से राजनीतिक प्रचार के अन्तर्गत आते हैं। उनका समर्थन वस्तुतः हमारे विवेक अथवा अभेद्य प्रमाण द्वारा होता है। यही कारण है कि सत्य की ये स्थापनाएँ न तो मिटाई जा सकती हैं और न अविवेकपूर्ण तर्कों और अनुचित बलप्रयोग के द्वारा अपदस्थ की जा सकती हैं। सत्य का यह प्रकृत स्वभाव है। सत्य के इन पक्षों की अनदेखी करते हुए चीनी तिब्बत पर राज्य किये जा रहे हैं और वह ऐसा करते हैं तो जाहिर है कि हम में उस साहस की कमी है जिससे हम अपने मनोरथ की प्राप्ति कर सकते हैं। तिब्बत वासियों को बिना किसी अपवाद के, वे स्वदेश में हो या प्रवास में, सत्य के इन पक्षों को अच्छी तरह अंगीकार कर लेना चाहिये और उनमें पूर्ण निष्ठा के साथ बिना हिचक के मनोयोग-पूर्वक एक सत्याग्रह आन्दोलन में डटकर भाग लेना चाहिए जो हमारी सत्य निष्ठा को विजयी बना सके।

5. सत्याग्रह आन्दोलन की योजना

परम पावन दलाई लामा के भारत में प्रवास काल में अब तक तिब्बत की आज़ादी के लिये काफी कुछ किया गया है। इस सम्बन्ध में संपूर्ण विश्व को प्रमाणिक सूचनाएं उपलब्ध कराई गई है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में समय समय पर प्रतिनिधि मंडल भेजे जाते रहे हैं। भावी तिब्बत के संविधान की रुपरेखा बनाकर प्रसारित की गई है। प्रवासी तिब्बती सरकार को लोकतन्त्र की प्रणाली में ढाला गया है। अन्य अनेक नें प्रकार की गतिविधियाँ संचालित की गई हैं। इस संदर्भ में यह बतलाना उचित होगा कि 1979 में चीन के राजनेता देंग श्आवो पेंग ने इस बात का संकेत दिया कि पूर्ण स्वतंत्रता के अलावा अन्य सभी मामले शान्तिपूर्ण वार्ता से हल किये जा सकते हैं। जिसके अनुसार इस तरह के प्रयत्न किये गये हैं कि अनेक बार शिष्टमंडल भेजकर तिब्बत और चीन में एक शान्तिपूर्ण वार्ता सन्धि की जा सके। इन प्रयासों को जारी रखते हुए परम पावन ने 1987 में अपनी पंचसूत्रीय शान्ति योजना बनाई और 1988 में उन्होंने यूरोपीय संसद के समक्ष स्ट्रासबर्ग प्रस्ताव रखा। यद्यपि एक शान्ति पूर्ण संधि के लिये उन्होंने अपने प्रयत्नों में कोई कमी नहीं छोड़ी है। लेकिन चीनियों ने अपने पहले के वक्तव्यों के अनुरुप ऐसी किसी संधि के लिये अपनी इच्छा की अभिव्यक्ति का कोई कार्य नहीं किया।

अब तो चीन के साथ संपर्क और संवाद भी स्थगित कर दिये गये हैं और अनुनय का सारा भार अन्तर्राष्ट्रीय दबाव पर छोड़ दिया गया है जिससे चीनियों को राजी किया जा सकता है। 1994 के दस मार्च के अपने संदेश में परम पावन दलाई लामा ने जनता को इस तरह संदेशित किया: है कि अन्तर्राष्ट्रीय दबाव का संतोष जनक परिणाम न निकलने की स्थिति में वह तिब्बत वासियों से उनकी राय लेंगे कि भविष्य में आगे बढ़ने का कौन सा मार्ग प्रशस्त होगा। इस समय चीनी जिस प्रकार आगे बढ़ते जा रहे हैं उसपर विचार करने से तो ऐसा नहीं प्रतीत होता कि अभी वह समय आ गया है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय दबाव को देखते हुए चीनी समझौतावार्ता के लिये प्रस्तुत हो सकेंगे। जहाँ तक भविष्य की बात है जब तक तिब्बतवासी-विशेषत: तिब्बत देश में रहने वाले तिब्बती, तिब्बत की आज़ादी के लिये एक गंभीर आंदोलन नहीं चलाते जो उनकी जनाकांक्षा का साफ संकेत हो, ऐसा नहीं लगता कि केवल अन्तर्राष्ट्रीय

दबाव और सहायता का कोई विशेष प्रभाव पड़ने वाला है। ऐसी परिस्थिति में हम तिब्बत वासियों को एक निश्चित कार्य योजना तैयार कर लेनी चाहिये जिससे जब दलाई लामा जी हमसे हमारी सम्मति मांगे तो हम अपनी योजना उनके सामने रख दें। सत्याग्रह आन्दोलन की यह योजना जनता के ही विचार के लिये रखी गयी है।

संक्षेप में, योजना इस प्रकार है : अगर चीनी अधिकारी तिब्बत वासियों के संतोष के अनुसार एक शान्तिपूर्ण संधि के लिये 1995 तक ठोस कदम रखने में असमर्थ रहते हैं तो दस मार्च 1996 से सभी तिब्बती (प्रवासी तिब्बतियों के साथ) एक मन और विचार के साथ संपूर्ण अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़ेंगे।

6. सत्याग्रही की अपेक्षित योग्यताएँ

क. सत्य और शान्ति के अहिंसा मार्ग में पूर्ण निष्ठा रख कर हमें सदाचार का समुचित आचरण करना होगा (जिसका अलग से निर्देश किया गया है)। जिसके अनुसार मिथ्या वचनों और अन्य लोगों को किसी तरह की क्षति पहुँचाने का विचार त्याग देना चाहिये। आन्दोलन में भाग लेने के पूर्व कम से कम तीन महीना उक्त आचार का पालन करना होगा।

ख. प्रतिपक्ष के प्रति हमारे मन में किसी तरह का रोष, घृणा अथवा क्षति पहुँचाने की भावना नहीं होनी चाहिये। प्रतिपक्षी में साम्यवादी चीन के सभी सरकारी अधिकारी और कार्यकर्ता एवं उनके साथ संपर्क रखने वाले आते हैं।

ग. सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिये यह अनिवार्य होगा कि उस में इतना साहस होना चाहिये कि वह हिंसा का उत्तर हिंसा से न दे और न ही अपने बचाव के लिये हिंसा का प्रयोग करें-उसपर कितनी भी मार क्यों न पड़े, उसे कारागार में कितनी ही यातना क्यों न सहनी पड़े। सब कुछ उसे बर्दास्त करना होगा।

घ. तिब्बत की आज़ादी को ध्येय मान कर चलने वाले सत्याग्रह आन्दोलन कर्ता को उसे एक राजनीतिक आन्दोलन अथवा ऐसा कोई लोक-संबन्धी कार्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिये जिस से चीनी समुदाय को ठेस लगती हो। इसके विपरीत हमें इस यथार्थ को मान कर चलना होगा कि हम तिब्बत की

आज़ादी के लिये आध्यात्मिक साधना में रत हैं जिससे संसार के सभी प्राणियों का कल्याण हो सके।

ङ आन्दोलन में भाग लेने वाले को किसी प्रकार के यश, मान-सम्मान, राजनीतिक अथवा आर्थिक लाभ या अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धि पर लोगों को प्रशंसा की इच्छा नहीं रखनी चाहिये।

च. किसी भी अवसर पर अपने विषय में न तो किसी से डींग हांकनी चाहिये और न ही अपने कार्य के लिये श्रेय लेने की अपेक्षा रखनी चाहिये, क्योंकि वह उस तरह के विचारों को त्याग चुका होता है। इस संबन्ध में विशेष ध्यान देने की बात यह है कि आज़ादी मिलने पर हमें कोई ऐसी अपेक्षाएँ नहीं रखनी चाहिये जैसे राजनीतिक पद, सामाजिक गौरव, आर्थिक सहायता या अन्य किसी प्रकार का अपने या अपने संबन्धियों के लिये लाभ। स्वतन्त्र तिब्बत में इस तरह के गौरव से विरत रहना उचित होगा-किसी गौरव पूर्ण पद या सम्मान को प्राप्त करने के लिये कोई स्पष्ट और अनिवार्य कारण होने चाहिये।

छ. अपने व्यवहार में आने वाली सभी वस्तुओं, आवास, वेशभूषा, उपकरण आदि में एक ऐसी जीवन प्रणाली अपनानी होगी जिसमें दो अन्तों को छोड़ कर मध्य का रास्ता लिया जाय; किसी प्रकार के अनैतिक ढंग से जीविकोपार्जन का साधन नहीं अपनाना चाहिये और धनवान होने की कम से कम अभिलाषा रखनी चाहिये।

ज. ऐसे किन्हीं कार्यों में कभी भाग नहीं लेना चाहिये जो बेईमानी और मिथ्या युक्तियों से संचालित हों। ऐसे अनेक कार्य हैं जो हम निजी तौर पर अथवा लोक के लिये करते हैं। उनमें हमें उपर्युक्त पर ध्यान देना चाहिये।

झ. हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि परिवार के व्यक्ति जैसे बच्चे और बूढ़े अपने गुजर-बसर के लिये स्वयं पर अवलम्बित न रहें-यदि उनकी इस तरह की विवशता हो तो वे ऐसा परिवार की अनुज्ञा लेकर ही कर सकते हैं।

ञ. किसी के ऊपर ऋण का अतिभार नहीं होना चाहिये और न ही उसे किसी ऐसे दायित्व का सरोकार होना चाहिये जिस में विभिन्न लेखा जोखा और विवादग्रस्त संपत्ति के झमेले शामिल हों।

अहिंसा व्रत का हमें प्राण-पण से पालन करना चाहियें। सत्याग्रह आन्दोलन के संचालकों द्वारा बनाये गये नियम-परिनियम (जो समय समय पर पारित किये जायंगे) हर दशा में अनुल्लंघनीय होंगे।

7. सत्याग्रही के प्रण

प्रत्येक सत्याग्रही को इस तरह के प्रण लेने होंगे :

1. जिस क्षण से कोई व्यक्ति सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित होता है आन्दोलन के घोषित लक्ष्यों की संप्राप्ति तक अथवा उस दशा तक जब कि प्रत्येक आन्दोलन कर्ता बिना किसी अपवाद के अपने प्राणों का बलिदान नहीं कर देता आन्दोलन से विरत नहीं हो सकता।

2. एक सत्याग्रही को तन मन लगा कर अनेक संकटों को झेलते हुए आन्दोलन के मार्ग में डटा रहना चाहिये और जीवन पर्यन्त एक आन्दोलन कर्ता के रुप में कार्यरत रहना चाहिये।

3. एक सत्याग्रही को प्रशंसा या निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए। यदि उस में प्रतिज्ञा का बल है तो उसकी कोई कितनी भी आलोचना क्यों न करें उसे अपने पथ से मोड़ नहीं सकता।

8. सत्याग्रही के ध्येय

सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेनेवाले हर एक व्यक्ति को निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये :-

1. आन्दोलन के आरंभ में ही हमें यह समझ लेना चाहिये कि आन्दोलन छेड़ने के बाद संभव है कि हमें मौत का शिकार बनना पड़े और संभवत: आन्दोलन के सभी सदस्य मौत के घाट उतारे जायं। ऐसी दशा में आन्दोलन अपने ध्येय तक पहुँचने में सफल नहीं होता। परन्तु हमें मान कर चलना चाहिये कि आन्दोलन के सभी सदस्य सत्तर वर्ष से अधिक आयु तक जीवित नहीं रहेंगे। जब दोनों तरह से मरना ही है फिर बिना अपने मूल कर्त्तव्य के ऋण को चुकाये कुछ वर्ष बाद मरने की अपेक्षा अपने मूल कर्त्तव्य के अनुपालन में कुछ वर्ष पूर्व प्राण दे डालना अधिक श्रेयस्कर है। संभव है कोई अभी करना न चाहे तो इसका आश्वासन कौन दे सकता है कि उसकी कब मृत्यु होगी?

2. हमारे ध्येय की पूर्ति हुए बिना आन्दोलन के सभी सत्याग्रही मारे जाते

हैं तो भी हमारे समकालीन तिब्बती बन्धुओं को एक न दिन मरना ही है। हम चाहे सत्याग्रह आन्दोलन आरंभ करें अथवा नहीं। इसमें विशेष महत्व की बात यह है कि यदि हमारा आन्दोलन सफल नहीं होता अथवा हम (अपने ध्येय की प्राप्ति के लिये) एक आन्दोलन नहीं चलाते तो हमारी संस्कृति और हमारी जातीय पहचान को नष्ट होने से कोई बचा नहीं सकता। जब सब कुछ किसी न किसी बहाने नष्ट ही होना है तो मूक द्रष्टा बन कर विनाश को देखने की अपेक्षा-इस संबन्ध में कोई कितनी दलीलें क्यों न दे- यह उचित होगा कि हम अपने मूल कर्त्तव्य के अनुपालन में ही सारा विनाश देखें।

9. सत्याग्रह के रुप

सत्याग्रह की दो विधियाँ हैं : व्यक्तिगत और सामूहिक। जिस दिन से एक व्यक्ति सत्याग्रह के अनुरुप योग्यताओं को संपादित कर इस आन्दोलन में सम्मिलित होता है वह पुरुष या स्त्री सामूहिक योजनाओं के संचालन की राह न देख कर समय और स्थान के विचार से ऊपर बतलाई गई दो विधियों में से किसी एक को चुन सकता है। परन्तु उसे इस चयन के पूर्व एक सत्याग्रही की कुल अर्हताओं का संपादन कर लेना होगा। ऐसे सत्याग्रही तिब्बत देश के भीतर अथवा देश के बाहर आन्दोलन में भाग ले सकते हैं। व्यक्तिगत सत्याग्रह के अनेक तरीकें हैं जिन्हें सामूहिक सत्याग्रह में सम्मिलित होने के पूर्व अपनाया जा सकता है और समय आने पर सामूहिक सत्याग्रह में भाग लिया जा सकता है।

सामूहिक सत्याग्रह कम से कम पाँच व्यक्तियों के समूह में किया जा सकता है और उसका योजनानुसार नियमन आवश्यक है। सामूहिक सत्याग्रह की योजना समय और स्थान देख कर बनाई जानी चाहिये और उसका तदनुसार अनुसरण करना चाहिये।

10. आन्दोलन की अवस्थाएँ

क. व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिये समय और स्थान का बन्धन नहीं है, अतः उसके लिये कोई सुनिश्चित कार्य योजना का क्रम नहीं है।

ख. सामूहिक सत्याग्रह एक निश्चित दिन तय कर आरंभ किया जायगा उस

दिन से जो कोई प्रवासी तिब्बती उक्त आन्दोलन में सम्मिलित होना चाहते हों और जो अपने को एक सत्याग्रही की योग्यताओं से संपन्न समझते हों उन्हें आन्दोलन की अवधि में अपनी कुल संपत्ति और दायित्व एक ओर रख कर स्वदेश लौट कर सत्याग्रह में भाग लेना होगा।

ग. उस निश्चित दिन से तिब्बत में रह रहे व्यक्ति जिन्होंने आन्दोलन में भाग लेने के लिये अपना नाम दिया है अपने निर्धारित क्षेत्र में सत्याग्रह का कार्य आरंभ करेंगे।

घ. इसकी निश्चित समीक्षा करने के बाद कि कितने कर्मठ सत्याग्रही उपलब्ध हैं और उन्हें ध्यान में रख कर अनुपात के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिये भेजा जाएगा। कर्मठ सत्याग्रहियों की पहली टोली जिस समय हिंसा के द्वारा बलपूर्वक समाप्त कर दी जायेगी अथवा जेल में ठूँस दी जाएगी उसके दो एक दिन के भीतर दूसरी टोली आन्दोलन चलाने के लिये प्रस्तुत हो जायेगी और इस तरह हमारा आन्दोलन चलता रहेगा।

11. सत्याग्रह के प्रकार

संपूर्ण सत्याग्रह-जो सर्वशः अहिंसात्मक होगा-आन्दोलन की दिशा, समय और स्थान का विचार कर के अपने प्रकार निश्चित करेगा। उसके निर्णय में आन्दोलन के संबन्ध में वर्तमान आवश्यकताओं और मांगों पर पूरा विचार किया जायेगा। इस स्थिति में आन्दोलन के सभी प्रकारों के संबन्ध में निर्णयात्मक ढंग से कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना हम कह सकते हैं कि सत्याग्रह आन्दोलन में सविनय-अवज्ञा, असहयोग और दमन का शान्तिपूर्ण प्रतिशोध सम्मिलित होंगें। ऐसे आन्दोलन को कुछ उदाहरणों से हम यहाँ रेखांकित करेंगे।

क. सत्याग्रही चीन की केन्द्रीय सरकार और तिब्बत में उसके द्वारा नियन्त्रित क्षेत्रीय और प्रान्तीय सरकारों के द्वारा प्रसारित आदेशों और हिदायतों की सर्वथा अवमानना करेंगे।

ख. साम्यवादी चीन के केन्द्रीय, क्षेत्रीय अथवा स्थानीय शासन के द्वारा संचालित किसी लोक निर्माण के कार्य और योजना में न तो सम्मिलित होंगे और न ही उनके साथ सहयोग करेंगे।

ग. ऐसे सभी सत्याग्रही जो इस समय चीन की सरकार के केन्द्रीय, क्षेत्रीय

या स्थानीय निकायों के द्वारा अनुशासित दफ्तरों, स्कूलों, कारखानों या अन्य कार्यशालाओं में कार्यरत हैं उन्हें तत्काल त्यागपत्र दे देना होगा।

घ. सत्याग्रही चीनी सरकार या चीनियों के द्वारा उत्पादित की गई किसी वस्तु को न खरीद सकेंगे, न बेच सकेंगे और न ही उस प्रकार की किसी वस्तु को अपने पास रख सकेंगे या व्यवहार में ला सकेंगे।

ड. सत्याग्रही चीन की सरकार या चीनियों के द्वारा संचालित किसी चायघर(रेस्तरां), स्टोर अथवा होटल की न आर्थिक सहायता करेंगे, न उनमें जायेंगे।

च. सत्याग्रह का व्रत लेने वाले छात्र और अध्यापक चीनी भाषा अथवा किसी प्रकार के चीनी अध्ययन को ग्रहण करने अथवा विद्या दान से विरत रहेंगे।

छ. सत्याग्रही अपने किसी संगठन में चाहे वह एक निर्माण स्थल हो या एक छोटी सी दर्जी की दुकान या नाई का सैलून कोई चीनी कर्मचारी नहीं रखेंगे।

ज. सत्याग्रही किसी संगठन में चीनियों के साथ साझा नहीं करेंगे चाहे वह खुदरा दुकानदारी, सेवा, कृषि अथवा कोई अन्य उद्यम हो।

झ. संक्षेप में सत्याग्रही किसी प्रकार भी तिब्बत के चीनी अधिग्रहण से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रखने वाली किसी रचनात्मक योजना के साथ सहयोग नहीं करेंगे। चीनियों की तिब्बत में चल रही ऐसी कई योजनाएँ हैं जैसे चीनी जन संख्या का तिब्बत में स्थानान्तरण, तिब्बत के पर्यावरण का विनाश। इनसे सत्याग्रही को दूर रहना चाहिये। हर बड़े या छोटे नगर या गाँव में सड़कों पर रोज एकत्र हो कर सत्याग्रही अपनी बातें शान्ति पूर्ण ढंग से रखेंगे और किसी भी प्रकार की हिंसा का मुकाबिला करेंगे। इन मुकाबिलों में सत्याग्रही अपने झंडे में लगे डंडों का प्रयोग अपने बचाव के लिये भी नहीं करेंगे और हथियार को कौन कहे अपने शान्ति नारों के लिये प्रयुक्त बोर्ड आदि को भी-आत्मरक्षा के लिये आगे नहीं करेंगे। विरोध व्यक्त करने के लिये सत्याग्रही नारे लगायेंगे और अपनी वर्तमान मांगों को प्रस्तुत करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखेंगे। वे अपने भाषणों और लेखों के द्वारा अपना पक्ष सामने रखेंगे।

ञ. सत्याग्रह के सिद्धान्तों और तरीकों जैसे असहयोग और सविनय अवज्ञा आदि के रुप में सत्याग्रही अपना विरोध व्यक्त कर सकेंगे। इस तरह की क्रियाओं में समय और स्थान के अनुसार योजना-बद्ध तरीके से कार्य करना होगा।

यद्यपि ऐसा करते समय एक व्यक्ति को दुर्धर्ष कठिनाइयाँ सहन करनी होंगी जैसे उसे भूखा-प्यासा रहना होगा, परन्तु जानबूझ कर उसे अनशन या आत्मदाह आदि का आश्रय लेकर अपने जीवन का बलिदान नहीं करना चाहिये।

सत्याग्रह प्रणाली मे निम्न लिखित तरीकें भी अपनाये जाने चाहिये-

1. सत्याग्रही चीनी फिल्म और अभिनय देखने नहीं जायेंगे।
2. सत्याग्रही ऐसे किसी वीडियों अथवा टेलिविजन पर प्रदर्शित कार्यक्रम नहीं देखेंगे या सुनेंगे जो चीनी भाषा में हो।
3. सत्याग्रही परम पावन दलाई लामा के चित्र का बिल्ला लगायेंगे।
4. सत्याग्रही निर्धारित दिनों पर काला बैज धारण करेंगे अथवा अपनी बाहों पर काली पट्टियाँ लगायेंगे।
5. सत्याग्रही एक निश्चित अवधि के भीतर जो लगभग एक मास की होगी अथवा सप्ताह में एक निश्चित तिथि या निर्धारित समय में नियमित रुप से मौन जुलूस निकाल कर अपना विरोध प्रदर्शित करेंगे।
6. सत्याग्रही चीनी राष्ट्रीय पोशाक नहीं धारण करेंगे।
7. सत्याग्रही बोलने या लिखने में सब समय तिब्बती भाषा के प्रयोग के लिये प्रतिबद्ध होंगे।
8. सत्याग्रही ऐसा कोई समाचार पत्र या पत्रिका न तो खरीदेंगे और न ही पढ़ेंगे जो चीनी भाषा में प्रकाशित हों।
9. सत्याग्रही पन्द्रह से लेकर तीस मिनट तक रोजाना रात्रि में आठ से दस बज के बीच लाक्षणिक रुप से रोशनी बुझा दिया करेंगे।
10. सत्याग्रही हर शाम एक निर्धारित समय पर प्रार्थना करेंगे और राष्ट्रीय गीत का गायन करेंगे जिसके पश्चात् नगाड़े और तुरही आदि वाद्य यन्त्रों को छतों पर ले जा कर दिशाओं में निनादित करेंगे।
11. सत्याग्रही घरों के ऊपर तिब्बत का राष्ट्रध्वज और धार्मिक पताकाएं फहरायेंगे।

12. सत्याग्रह आन्दोलन की माँग

सत्याग्रह आन्दोलन की प्रारंभिक मांगे और शर्तें ऐसी होनी चाहिये जिनका समाधान संभव हो और उनका संतोष जनक हल निकाला जा सके। आन्दोलन की सफलता के लिये मांगों का प्रयास विवेक पूर्ण हल निकालने की

दिशा में अग्रसर होना आवश्यक है। यहाँ हम ऐसी ही मांगे उपस्थित कर रहे हैं जिन्हें लेकर आन्दोलन आरंभ किया जा सकता है।

क. तिब्बत में चीनी जनसंख्या के स्थानान्तरण को अविलंब रोका जाय।

ख. तिब्बत और चीन में मानवाधिकारों का उल्लंघन न होने दिया जाय।

ग. तिब्बती और चीनी राजनीतिक बंदियों की तत्काल रिहाई की जाय।

घ. तिब्बत में पर्यावरण की रक्षा की जाय। इस संबन्ध में इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि वहाँ परमाणविक परीक्षण, परमाणविक उत्पादन की सुविधा और परमाणविक संयन्त्रों में प्रयुक्त रासायनिक दूषित पदार्थ और कचरे के अम्बार पर तत्काल पाबन्दी लगाई जाए।

ड. केन्द्रीय और स्थानीय प्रशासनिक व्यवस्था को तत्काल लोकतान्त्रिक स्वरुप दिया जाय।

इस सत्याग्रह आन्दोलन के परिणाम स्वरुप उसके आरंभ में अनुकूल परिणाम मिलते हैं जिनके तहत ऊपर की मांगों में कोई एक अथवा कई मान ली जाती हैं तो आगे हमारा प्रयास होगा कि हम तिब्बतियों को स्वायत्त शासन दिलाने की माँग करें। उसके बाद हम क्या करेंगे यह पूर्व की गतिविधियों का सहज परिणाम होगा।

उपर्युक्त माँगों के साथ यह आवश्यक होगा कि-

1. तिब्बत में हाल में बसाये गये चीनी आवासियों को तिब्बत छोड़ने के लिये आदेश दिये जांय जिससे वे एक निर्धारित अवधि के भीतर प्रत्यावर्तित किये जा सकें।

2. चीनी शासन के अन्तर्गत जहाँ कहीं मानवाधिकारों का हनन होता पाया जाय उसकी जांच एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग के द्वारा कराई जाए। इससे सच्चाई के सामने आने और दायित्व के निर्धारण में सहूलियत होगी।

13. सत्याग्रह में आने वाली बाधाओं का पूर्वाभास

यह संभव है कि सत्याग्रह आन्दोलन को अनेक बाधाओं और रुकावटों का सामना करना पड़े। परन्तु उनमें से कई एक तो ऐसी होंगी जो साधारण कोटि की होंगी फिर भी कुछ गंभीर रुकावटें हमारे मार्ग में आ सकती हैं। उनका स्वरुप कुछ इस प्रकार का हो सकता है:

क. सत्याग्रहियों को इसके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये कि उन्हें अधिक से अधिक संत्रास और पीड़ा झेलनी पड़े और हमारे क्रूर प्रतिपक्षी हर ऐसे उपाय का इस्तेमाल करेंगे जिससे हमारी उत्तेजना बढ़े। ऐसा करने से उनका प्रयत्न यही होगा कि आन्दोलन कर्ता हिंसा और छल कपट का सहारा लेने के लिये विवश किये जायं। इस की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कोई आन्दोलन कर्ता अपना अहिंसा-व्रत तोड़ दें। एक दूसरी संभावना यह है कि सत्याग्रह आन्दोलन कर्ताओं के बीच प्रतिपक्षी अपने व्यक्तियों को अत्यन्त कपट पूर्ण ढंग से घुसा दे जो दूसरे आन्दोलन कर्ताओं को हिंसा के लिये उत्तेजित करें।

ख. कुछ लोगों के अनर्गल और मिथ्या बयानों एवं इस तरह के अन्य कार्यों से यह भ्रम पैदा हो सकता है कि समझौते तक पहुंचने के लिये कोई व्यवहारिक हल निकलने की आशा है। ऐसे व्यर्थ के बहस मुबाहसों में केवल समय ही नष्ट होगा जो जाने-अनजाने में सत्य के आन्दोलन को रोक दिये जाने का कारण बन सकता है।

हमें इन दोनों परिस्थितियों का बुद्धिमानी और सतर्कता से सामना करना होगा।

14. आन्दोलन के संबन्ध में सूचना-संचार

सत्य के आन्दोलन का तरीका प्रचार नहीं है और न ही वह अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का साधन है। फिर भी यह आवश्यक है कि हम अपनी मांगों के संबन्ध में संबन्धित क्षेत्रों के शासकीय अधिकारियों और चीन की केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों को वक्तव्य प्रेषित करते रहें। इस तरह के वक्तव्यों के अलावा हम आन्दोलन को आन्दोलन के नाते समाचार जगत में अपने आत्म प्रकाशन का प्रयास न करें। परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उसे गुप्त रखा जाय जिससे यदि कोई उसके संबन्ध में जानकारी प्राप्त करना चाहते हो तो समाचार पत्रों, रेडियों, टेलिविज़न या इंटरनेट प्रतिनिधियों को उसके सम्बन्ध में साफ साफ जानकारी दे दी जाय। उक्त जानकारी ऐसे व्यक्तियों को भी दी जा सकती है जिनकी इस विषय में दिलचस्पी हो।

15. आन्दोलन का आर्थिक आधार

आन्दोलन के लिये स्वयं सत्याग्रहियों द्वारा धनराशि के संचय और उसके समुचित व्यय के निर्धारण के लिये एक व्यवस्था स्थापित की जायेगी। इसका ध्यान रखना होगा कि किसी अनैतिक जीविकोपार्जन से कोई धनराशि नहीं ली जायेगी। आन्दोलन में लोगों से ऐसे चन्दे लिये जायंगे जो स्वेच्छा से बिना किसी प्रत्याकांक्षा के आन्दोलन के लिये दान के रुप में दिये जायंगे। दाता को इस संबन्ध में यश अथवा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के विचार को त्यागना होगा।

16. सत्याग्रह आन्दोलन के समर्थक

इस आन्दोलन के समर्थन में ऐसे लोग भी आगे आयेंगे जो सत्याग्रही न होते हुए उसकी सफलता की कामना करने वाले होंगे। ऐसे लोग इस तरह के कार्य कर सकते हैं जैसे चन्दा एकत्रित करना, जन-संपर्क स्थापित करना, सूचनाएँ प्रकाशित करना एवं तत् संबन्धी प्रकाशनों में भाग लेना। ये कार्य आन्दोलन की संपूर्ण अवधि या एक निश्चित समय के लिये प्रस्तावित हैं। इन कार्यों के करने के लिये आन्दोलन के समर्थकों में छठे अनुच्छेद के क,ख,घ,ङ,च,छ,ञ और ट बिंदुओं में उल्लिखित गुणों का होना आवश्यक है।

17. सत्याग्रह के संबन्ध में आशंकाओं पर प्रतिक्रिया

बहुत से लोग हमारे सत्याग्रह आन्दोलन के विषय में अपनी राय जाहिर करते हुए उसे गाँधी जी के सत्याग्रह से सर्वथा भिन्न बतलाते हैं। गांधी जी ने अपना सत्याग्रह आन्दोलन उस समय आरंभ किया था जब भारत में ब्रिटिश सत्ता कायम थी; हमारा आन्दोलन सर्वथा उस जैसा कैसे हो सकता है। इसी तरह यं लोकतांत्रिक देशों में चलाये गये आन्दोलनों से भी भिन्न है। इनके विपरीत चीन एक बड़ा बहुसंख्यक देश है जिसके पास अपार सैनिक बल है और जिसकी एक अनैतिक, आदर्श विहीन और बेशर्म सरकार है जिसका न तो कोई

कानून है और न ही मानवाधिकारों और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में कोई विश्वास है। हमारे आन्दोलन के प्रति शंका व्यक्त करने वाले लोगों का मानना है कि विपरीत परिस्थितियों में एक सत्याग्रह आन्दोलन चलाने के लिये कोई रास्ता नहीं है और जिस तरह भी उसे आरंभ करते हैं तो उसमें सम्मिलित होने का तात्पर्य आत्मदाह ही हो सकता है।

यद्यपि ऐसी शंका व्यक्त करने वाले बहुत से लोग हैं, परन्तु सच तो यह है कि सत्य और अहिंसा में सचमुच शक्ति है तो उनके आधार पर हम किसी भी ताकत को गिरा सकते हैं। सत्य और अहिंसा के मार्ग को निर्दयी कानून का सामना करना पड़ता है तो सत्य और अहिंसा में भी अधिक क्षमता आ जायगी। जब मिथ्या का सामना सत्य से हो और हिंसा अहिंसा के मार्ग में आ जाय तो अधिक ऊर्जा वान वही होगा जो विशेष विश्वसनीय हो। यह एक मानी बात है कि किसी का विरोध पाशविक शक्ति से हो तो पाशविक शक्ति रखनेवाले अधिक बलशली नहीं हो सकते। जैसा कि हम जानते हैं कि बुद्ध शाक्य मुनि ने करोड़ों आसुरी शक्तियों को एकमात्र प्रेम भावना से दमित कर दिया था-यहाँ हम एक प्रचलित लोक कथा का प्रसंग नहीं छेड़ रहे हैं; बल्कि मेरे विचार में हम शक्ति और अहिंसा के एक बौद्धिक प्रतीक के रुप में उपस्थित कर रहे हैं। अन्ततः एक ऐसे आन्दोलन में हिस्सा लेना चाहे आत्मदाह ही सही मैं पहले ही यह विचार रख चुका हूँ कि हमें किसी न किसी रुप में मरना तो है ही फिर एक खोखला और सारहीन जीवन जीने की अपेक्षा यह कहीं विशेष सारगर्भित और इतिहास की मांग के अनुरुप होगा कि अपने राष्ट्र एवं उसकी आध्यात्मिक परंपराओं के लिये सत्य और अहिंसा की आध्यात्मिक साधना में निरत रहकर प्राण उत्सर्ग कर दें।

सत्य को अहिंसा से जोड़ कर तुम संसार को अपने चरणों में झुका सकते हो। सत्याग्रह की मूल भावना राजनीति और राष्ट्र के जीवन में एकमात्र सत्य और नम्रता का प्रवेश कराना है।

-मोहनदास करमचंद गांधी (यंग इंडिया, 10 मार्च 1920)

एक सरल व्यक्ति का आत्म बलिदान उन लाखों मनुष्यों के बलिदान की अपेक्षा लाख गुना बढ़ कर है जो लड़ाई में नर-संहार में हिस्सा लेते हुए मारे जाते हैं। सरल व्यक्ति का ऐच्छिक बलिदान देव या मानव की कल्पना में आनेवाले क्रूर अत्याचार का सशक्त परिहास है।

-मोहनदास करमचन्द गांधी (यंग इंडिया, 12 फरवरी 1925)

तिब्बती जनता द्वारा प्रस्तावित सत्याग्रह

रमेश चंद्र तिवारी

1. सत्याग्रह क्यों

यह बहुत साफ बात है कि तिब्बत वासियों को अधिक समय न खो कर अपनी स्वाधीनता के लिये एक आन्दोलन प्रारंभ कर देना चाहिये। हम उस जगह पहुँच गये हैं जहाँ परिणाम की चिन्ता किये बिना हमें साफ-साफ, दृढ़ और निश्चित निर्णय लेना चाहिये। कब तक हम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में एक अनुकूल परिवर्तन की राह देखते रहेंगे। हमें जो कुछ करना है उसे अभी करना है। आन्दोलन में हम एक बार कूदें तो सही घटनाएँ एक ओर या दूसरी ओर मोड़ लेती दिखायी देंगी। तिब्बत वासी एक राष्ट्रीय आन्दोलन का संगठन करते हैं तो चीनी शासकों को आजिज आ कर हमारे आन्दोलन की सार्थकता समझ में आ जाएगी। यह आवश्यक है कि तिब्बत के प्रश्न को संसार की समस्याओं में सर्वोपरि प्राथमिकता प्रदान की जाय और वर्तमान चीनी शासन को तिब्बतियों पर उसके द्वारा ढाये गये जुल्मों एवं तिब्बत पर अपना साम्राज्यवादी, अन्याय पूर्ण, अमानवीय शासन थोपने के लिये लज्जित होना पड़े।

तिब्बतियों के समक्ष दो स्पष्ट किन्तु एक दूसरे के सर्वथा विपरीत विकल्प हैं :

क. स्वाधीनता के लिये एक उग्र हिंसात्मक संघर्ष छेड़ा जाय जैसा कि फिलस्तीनियों ने अपना फिलीस्तीन मुक्ति संगठन (पी. एल. ओ.) नामक संगठन चलाया है और दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका वासियों ने दक्षिण पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन (स्वापो) नामक संगठन स्थापित किया है।

ख. एक अहिंसात्मक जनसंघर्ष मोर्चा कायम किया जाय जैसा कि भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन चलाया गया था।

तीसरा अन्य कोई विकल्प नहीं है।

इस संबन्ध में शान्ति पूर्ण निष्पक्ष विचार से यही निष्पन्न होता है कि अहिंसा का मार्ग निश्चय सर्वोत्तम है और हमारे लिये वह एक श्रेष्ठ विकल्प है। वह नैतिकता के सर्वोच्च सिद्धान्तों पर आधारित और जीवन के शाश्वत मूल्यों पर स्थापित है जिससे उसकी उत्तमता में कोई संदेह नहीं है। इसे तो बड़े से बड़े उग्रविचार वाले भी स्वीकार करेंगे कि बाह्य परिस्थितियों को व्यावहारिक धरातल पर आंकने पर अहिंसात्मक प्रणाली ही हमारे लिये उपयुक्त हो सकती

है। यहाँ यह विचारणीय है कि केवल नैतिकता या जीवन के मूल्यों के विचार से ही नहीं बल्कि हमारी आवश्यकताओं, तौर तरीकों, टेकनीक, सहायक आधारों और मुक्ति संघर्ष के संभावित परिणामों को ध्यान में रखते हुए तिब्बतियों के लिये अहिंसात्मक सत्याग्रह का मार्ग ही सब से उपयुक्त और खुला मार्ग है।

2. सत्याग्रह क्या?

सत्याग्रह असत्य, अन्याय एवं शोषण के प्रति अहिंसात्मक संघर्ष की प्रणाली है। यह परिभाषा महात्मा गांधी की देन है जिन्होंने सत्याग्रह को लोकप्रिय बनाया। सत्याग्रह के वह सबसे बड़े व्रती थे। उस का सर्वप्रथम प्रयोग उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के गोरे शासकों की जातीय विभेद नीति के विरुद्ध चलाये जाने वाले अपने आन्दोलन में किया था और एक विराट स्तर पर दीर्घकाल तक भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में किया। अन्याय के विरुद्ध लड़ने में वह एक अमोघ अस्त्र साबित हुआ। जिसकी सार्थकता और नैतिकता का संसार कायल है। जाति विभेद, शोषण और पर्यावरण के विनाश के प्रतिकार स्वरुप उसका प्रयोग विभिन्न देशों के संघर्षों में किया गया है। आत्मोत्सर्ग की भावना से किये गये सत्याग्रह में सत्य की ऊर्जा होती है जिसके सामने बड़े से बड़े शक्तिशाली नहीं टिक पाते।

सत्याग्रह का शाब्दिक अभिप्राय 'सत्या का निष्ठापूर्वक पालन' है। सत्याग्रह शब्द सत्य और आग्रह इन दो शब्दों का समुचय है। गांधी जी ने उक्त प्रणाली का व्यवहार बुराई दूर करने के लिये किया था। वह वस्तुतः सत्य, प्रेम, दया और अहिंसा के सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका प्रयोग किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है और उसका व्रती एक व्यक्ति हो सकता है अथवा एक समूह में भी उसका व्यवहार हो सकता है। सत्याग्रह के लिये यह आवश्यक नहीं है कि अन्यायी सैनिक शक्ति से संपन्न है और सत्याग्रही सर्वथा अस्त्र शस्त्र विहीन।

3. सत्याग्रह की प्रणाली

सत्याग्रह एक ऐसा सिद्धान्त है जो सारे विश्व में व्याप्त है और इस

कारण वह किसी एक प्रणाली में सीमित नहीं है। गांधी जी कहा करते थे कि सत्याग्रह एक वट वृक्ष के समान है जिस की अनगिनत शाखायें होती हैं। सत्य और अहिंसा को मिला कर एक मूल तना बनता है जिसकी अनेक शाखायें चारों ओर फैल जाती हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार सत्याग्रह ही प्रणाली विशेष परिस्थितियों और जीवन की यथार्थता पर निर्भर करती है जो भिन्न समय में और भिन्न अवसरों पर अपना स्वरुप स्वयं निश्चित करती है। सामान्यतः सत्याग्रह प्रणाली को हम तीन कोटियों में वर्गित कर सकते हैं :-

क. आत्मशुद्धि के कार्य

ख. असहयोग

ग. सविनय अवज्ञा

उक्त वर्गों में सबसे पहले आत्मशुद्धि के कार्य आते हैं। एक सत्याग्रही कार्यकर्ता में जिन गुणों से नैतिक शक्ति के उत्पाद और असत्य एवं अन्याय के विरुद्ध लड़ने का संकल्प ले आया जा सकता है उन्हें आत्मशुद्धि के कार्यों के वर्ग में रखा गया है। इन कार्यों में प्रतिज्ञा, प्रार्थना और अनशन जैसे कार्य आते हैं। प्रतिज्ञा के द्वारा हम एक ऐसी शपथ लेते हैं जो ऐसे कार्यों या व्यवहारों में प्रतिफलित होती है जिससे अन्याय और असत्य का सामना किया जा सके। प्रार्थना से यहां तात्पर्य ऐसी इच्छा या संकल्प-शक्ति से है जिसके द्वारा हम एक महान कार्य की ओर बढ़ते हैं। यह भावना, चिन्तन और आत्मपरीक्षण की ही एक प्रणाली है जो सत्याग्रही को उसके प्रण के अनुसार योग्यता प्रदान करती है। सत्याग्रही को कुछ समय के लिये व्रत रखना होता है जिसके उद्देश्य आत्मशुद्धि, आत्मानुशस्ति और प्रायश्चित हैं। परिस्थिति के अनुसार ये तरीके स्थापित राज्य के विरोध के लिये भी अपनाये जा सकते हैं जब राज्य या संगठित शासन मौलिक सिद्धान्तों और मानवाधिकारों की अवहेलना करता है।

असहयोग का तात्पर्य अन्यायपूर्ण शासन और क्रूर शासकों के साथ सहयोग न करना है। गांधी जी के शब्दों में वह 'बुराई के कार्यों में जहालत के कारण एवं अनिच्छा पूर्वक सहयोग देने के खिलाफ मन्तव्य है'। वह प्रायः कहा करते थे कि कोई सरकार पल भर भी शासन में नहीं रह सकती अगर लोग असहयोग आरंभ कर दें। उनका यह मानना था कि यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह किसी अन्यायी शासन के साथ कोई सरोकार न रखे। असहयोग व्यक्त करने के अनेक तौर तरीके हैं। बहिष्कार और हड़ताल तो

असहयोग के सर्वविदित तरीके हैं।

बहिष्कार का स्वरुप कुछ इस तरह का हो सकता है :

क. स्थानीय संस्थाओं का बहिष्कार जिनमें स्कूल, कालेज और अदालतें आदि सम्मिलित हैं।

ख. आर्थिक बहिष्कार (विदेशी वस्तुओं के क्रय विक्रय से दूर रहना और अनपेक्षित वस्तुओं का त्याग)।

ग. सामाजिक बहिष्कार जिसके अन्तर्गत विदेशी शासन द्वारा आयोजित उत्सवों और सभाओं में भाग न लेना ओर विदेशी भाषा एवं वेश भूषा का सर्वथा त्याग आता है। सामाजिक बहिष्कार में जो बातें आती हैं उन में किसी प्रकार की उपाधि या यश न लेना एवं हड़ताल के द्वारा किंचित काल के लिये सामान्य कार्यों में अवरोध उपस्थित करना भी हैं। बहिष्कार का उद्देश्य शान्तिपूर्ण उपायों से अपनी असहमति व्यक्त करना और जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरुक बनाना है। बहिष्कार के अन्तर्गत दुकानें बन्द करवाना और व्यावसायिक केन्द्रों एवं सरकारी दफतरों में कार्यावरोध उपस्थित करना है।

असहयोग के दूसरे दो कारगर तरीकों में से सत्याग्रही अनशन और ऐच्छिक प्रवास को अपनाते हैं। इन में आत्मशुद्धि के लिये अनशन को एक साधन के रुप में अपनाया जाता है; जिसका प्रयोग कभी कभी जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिये भी किया जाता है। जिससे अन्यायी और उपेक्षा करनेवाले अधिकारियों को विवेक से कुछ परिचय कराया जा सके। आत्मबलिदान के लिये अनशन का सहारा अपरिहार्य परिस्थिति में ही लिया जाता है। वह विप्लव या अराजकता का तरीका कदापि नहीं है। इस लिये अनशन आत्मबलिदान को अनिवार्यतः एवं विशेष सावधानी के साथ ही प्रयोग में लाया जा सकता है।

ऐच्छिक प्रवास जो अरबी में 'हिज़रत' के रुप में ज्ञात है को गांधी जी ने असहयोग का एक ढंग माना है। हम कह सकते हैं कि इस देश में स्वेच्छा से प्रवास में रहने वाले परमपावन दलाई लामा इसके अन्यतम उदाहरण हैं। तिब्बत पर चीनियों की लाल सेना ने जब बलपूर्वक तिब्बत पर अधिकार किया उस समय परम पावन ने स्वेच्छा से देश छोड़ दिया और भारत में प्रवास में

आ कर रहने लगे। लाखों की संख्या में उनके तिब्बती अनुयायियों ने उन के साथ ही अथवा उनके भारत आगमन के बाद अहिंसा के मार्ग को अपनाते हुए हिजरत में भाग लिया। वे सभी स्वेच्छा से प्रवास में रह रहे तिब्बती उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब कि वे स्वाधीन तिब्बत के नागरिक बनकर स्वदेश को लौट आयेंगे।

4. एक सत्याग्रही से अपेक्षायें

जिसने सत्याग्रह श्रेष्ठमार्ग को चुना है उसे अपने जीवन की संपूर्ण प्रणाली बदलनी होगी। सत्याग्रही एक ऐसे समुदाय का व्यक्ति है जिसके सदस्य कुछ चुने हुए साहसी, स्वार्थरहित और आत्मोत्सर्ग की भावना से ओतप्रोत व्यक्ति होते हैं। जिस दिन से कोई पुरुष या स्त्री सत्याग्रही के रुप में अपना नामांकन करवाते हैं वे एक कठोर अनुशासन, उत्सर्ग और आदेश के अन्तर्गत जीवन बिताने के लिये बाध्य होते हैं। हर एक सत्याग्रही के लिये सत्याग्रह के मूलभूत सिद्धान्तों का पालन अनिवार्य है। इन सिद्धान्तों में ही कुछ ऐसे नियम हैं जिनका परिपालन सत्याग्रही को अपने मिशन के अन्त तक अथवा आजीवन करना होता हैं। ये सिद्धान्त और नियम इस प्रकार हैं :-

1. एक सत्याग्रही की सत्य में दृढ़ निष्ठा होनी चाहिये (सत्याग्रही को उन विशेष नियमों का पालन करना होगा जो इस पुस्तक के चौथे प्रकरण में दिये गये हैं)।

सत्याग्रही का चाहे वह पुरुष हो या स्त्री यह प्रयत्न होगा कि सत्य की रक्षा, सत्य के पुन:स्थापन और उसकी सुरक्षा के लिये अधिक से अधिक प्रयत्नशील रहे।

2. एक सत्याग्रही के मन में अपने विरोधी या शोषकों के प्रति किसी तरह का द्वेष या शत्रुता का भाव नहीं रहना चाहिये। सत्याग्रह में घृणा के लिये कोई स्थान नहीं है।

3. एक सत्याग्रही को प्रत्येक परिस्थिति में अहिंसा व्रत का पालन करना होगा। किसी के द्वारा उत्तेजित किये जाने पर भी उसे शारीरिक बल के प्रयोग की अनुमति नहीं हैं। उसे इसका ध्यान रखना होगा कि वह अपने विरोधी के प्रति निन्दात्मक शब्दों या गाली गलौज का प्रयोग नहीं करेगा।

4. एक सत्याग्रही को स्वेच्छा से और हंसते हंसते उन सभी संकटों का

सामना करना होगा जो उस के मार्ग में बाधाएं उपस्थित करेंगे।

इस प्रसंग में उसे जीसस क्राइस्ट के उदाहरण सामने रखना होगा जिनके अनुसार अपने प्रतिपक्षी को जीतना हो तो अपने शरीर पर जितना भी आघात हो उसे सहज भाव से स्वीकार कर लेना चाहिये।

5. एक सत्याग्रही को जीवन में सादगी और सहनशीलता बरतनी होगी। तदनुसार उसे अपने भोजन वस्त्र एवं आवास पर ध्यान देना होगा। उसे अपनी व्यक्तिगत इच्छाएं दमित कर बहुजन कल्याण की कामना रखनी चाहिये।

6. एक सत्याग्रही पुरुष या स्त्री प्रतिदिन कम से कम एक घंटा किसी रचनात्मक कार्य में अपना समय देगा। वह रचनात्मक कार्य कृषि, बागवानी, पशुपालन, कताई, बुनाई या मशीनी कार्य से संबंधित होगा।

7. एक सत्याग्रही प्रतिदिन कम से कम एक घंटा सामाजिक सेवा या रचनात्मक कार्य में लगा देगा जिन के अन्तर्गत कचरे वाली बस्तियों, अस्पतालों, कुष्ठ आश्रमों, विकलांगों के बीच कार्य सम्मिलित हैं। रचनात्मक कार्य के लिये वह शिक्षा के क्षेत्र, पर्यावरण सुरक्षा, सामाजिक संगठन, धार्मिक सहिष्णुता या शान्ति के पुन: स्थापन के क्षेत्र चुन सकता है।

8. एक सत्याग्रही अपने सत्याग्रही बन्धुओं-बहनों के साथ परस्पर भ्रातृत्व और मैत्री के संबन्ध स्थापित करेगा। अपने सहयोगी कार्यकर्ता की वह आवश्यकता पड़ने पर सहायता करेगा।

9. एक सत्याग्रही सौंपी गई जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार करेगा और यदि आवश्यकता हुई तो उसे सत्याग्रह आश्रम, सत्याग्रह कैंप अथवा प्रशिक्षण केन्द्रों की सामूहिक अनुशासन व्यवस्था को अंगीकार करना होगा।

10. एक सत्याग्रही अपने समूह के नेता के निर्णयों और आदेशों का एक अनुशासित सैनिक की तरह पालन करेगा। समूह का नेता स्वयं अपने से ऊपर के नेता के निर्णयों के अनुसार कार्य करेगा। इस संबंध में हर एक को सत्याग्रह आन्दोलन के सर्वोच्च नेता या अधिकारी की आज्ञा का पालन करना होगा।

5. हमारे महानतम संबल

यद्यपि तिब्बत आज अपने इतिहास के सबसे संक्रामक काल में गंभीर संकटों का सामना कर रहा है, फिर भी तिब्बत वासियों को यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि उनके पास ऐसे दो महानतम संबल हैं जिनसे उन्हें अदम्य

शक्ति प्राप्त होती रहती है। अतीत की हर संकट कालीन परिस्थितियों में उस शक्ति से उन्हें बल मिलता रहा है और भविष्य में भी वे उस शक्ति से अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकेंगे।

ये दो सबल इस प्रकार हैं :

क. महान तिब्बत राष्ट्र के अधिवासियों की चरित्रगत विशेषताएं, एवं

ख. परमपावन दलाईलामा का सान्निध्य।

इनमें से पहले के विषय में सभी जानते हैं कि तिब्बतियों की गणना संसार की सबसे साहसी जातियों में की जाती है। उन्हें विरासत के रुप में एक महान सभ्यता मिली है जो अपने में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से समृद्ध है। अपने लम्बे और घटना प्रधान इतिहास में उन्होंने अपने श्रेष्ठ मानवीय गुणों के प्रदर्शन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है जिससे उनकी लगन, उनके धैर्य, साहस, क्षमाशीलता, प्रेम और दया की भावना से मानव जाति अच्छी तरह परिचित है। जब एकबार वे किसी इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करने का संकल्प कर लेते हैं तो तन मन धन से उसके लिये वे तैयार हो जाते हैं। तिब्बत के लोगों के ये गुण उनके अमूल्य संबल हैं।

तिब्बतियों का यह सौभाग्य है कि उनके एक मात्र संरक्षक के रुप में परमपावन दलाई लामा उनके बीच विद्यमान हैं। वे हमारे अभिभावक और नेता है। वह केवल तिब्बती संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक ही नहीं है बल्कि तिब्बत की राष्ट्रीयता और स्वाधीनता के भी सबसे बड़े प्रतीक हैं। लाखों तिब्बतवासी जो तिब्बत और बाहर के देशों में रह रहे हैं दलाई लामा की अशरण शरण के रुप में पूजा करते हैं। वह शाश्वत आध्यात्मिक सिद्धान्तों और उन सभी मूल्यों के प्रतीक हैं जिन से मानव मानव कहलाने के योग्य बनता है। विभिन्न संस्कृतियों की समृद्धि में उनकी प्रेरणा सहायक रही है। मनुष्य समाज के लिये जो कुछ अच्छा है, पुण्य से संयुक्त है, प्राप्त करने योग्य है और हितकर है उस के वह श्रोत हैं। इन गुणों का उन में विकास मानव समाज के लिये एक ज्वलन्त दृष्टान्त है। उन के हर उपदेश में प्रत्येक परिस्थिति में उन गुणों के अनुसार चलने की शिक्षा मिलती है। अतः इस में कोई आश्चर्य नहीं है कि सारे संसार में वह सत्य, शक्ति, दया और अहिंसा के मसीहा (संदेश वाहक) के रुप में वन्दनीय हैं। यह हर तिब्बती का धर्म है कि दल. ामा के उपदेशों और नियमों का पालन करें।

6. हमारा संकल्प और उम्मीदें

अब तिब्बतियों के लिये एक ऐतिहासिक निर्णय लेने का क्षण आ पहुँचा है। इतिहास उनका साथ नहीं देता जो समय पर कार्य करने में असमर्थ रहते हैं। सबसे पहले तो यही बात साफ होनी चाहिये कि हमें कोई कदम जल्दबाजी या उलझन में आगे नहीं बढ़ाना चाहिये। हमारे लिये वैसा कदम अपरिपक्व और असावधानी का विषय होगा। परन्तु इस के साथ हमें अपनी शक्ति और सक्रियता का गलत अनुमान भी नहीं लगाना चाहिये। वस्तु स्थिति तो यही है कि जबतक वर्तमान स्थिति बनी रहती है किसी प्रकार के ठोस और आशाप्रद बदलाव की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। अतएव, एक ऐसे समय जब परमपावन के साठवें जन्मदिवस का समारोह उनके भक्तों, प्रशंसकों और उनके प्रति शुभाशंसा रखने वालों के द्वारा व्यापक रुप से मनाया जा रहा है एक कृतज्ञ राष्ट्रवासियों का कर्त्तव्य है कि मानव इतिहास में एक परम अहिंसात्मक स्वाधीनता आन्दोलन का संचालन करें जिसके द्वारा तिब्बत की सांस्कृतिक जातीय और राष्ट्रीय पहचान का पुनरुद्धार किया जा सके। इसके लिये हमें सही दिशा में उचित कदम उठाना चाहिये। सत्य और न्याय हमारे साथ हैं।

परिशिष्ट-2

सत्याग्रह हेतु विचारणीय विषय

जहां तक सत्याग्रह के सिद्धान्त का पक्ष है इस में कोई संदेह नहीं है कि हमारे पास उसकी सुनिश्चित रुप रेखा है। आवश्यकतानुसार हम यथा साध्य आवश्यक संशोधन कर सकते हैं। परन्तु आवश्यकता तो उसे एक व्यावहारिक रुप देने की है। हमारे सामने मुख्य प्रश्न अपने योजना के कार्यान्वयन का है।

सत्याग्रह एक श्रम साध्य आन्दोलन है जो काफी लम्बे समय तक चल सकता है और जिसमें अनेक दशक बीत सकते हैं। उसका मार्ग संकटों और अनेक उतार चढ़ावों से भरा हुआ है। सत्याग्रह आन्दोलन का आरंभ करने के पूर्व अनेक तथ्यों और दशाओं पर गंभीर विचार करने की आवश्यकता है। जबतक हम उन तथ्यों को लेकर संपूर्ण आन्दोलन प्रक्रिया पर विचार नहीं कर

लेते तो उसका परिणाम व्यर्थ और क्षति पहुंचान वाला ही हो सकता है। उन तथ्यों और दशाओं में कुछ निम्नलिखित हैं :

1. तिब्बत की आन्तरिक स्थिति

सबसे पहले हमें इसी का विचार करना चाहिये कि तिब्बत के भीतर की क्या स्थिति है। साम्यवादी शासन की निरंकुशता ने चार दशकों के बीच तिब्बत के स्वरुप को काफी कुछ बदल डाला है तिब्बत वासियों की दो तीन पीढ़ियाँ एक ऐसे शासन के अन्तर्गत संपूर्ण जीवन बिता रही हैं जिसमें रोटी से लेकर शिक्षा की प्रणाली तक सभी साम्यवादी सिद्धान्तों के अनुसार परिचालित हुआ है। आज स्थिति यह है कि तिब्बत में चीनी स्वयं तिब्बत वासियों से अधिक संख्या में हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता लोकतन्त्र में विश्वास रखने वाले सभी देशों में प्रचलित है लेकिन तिब्बत में उसका अभाव है और सैनिक अधिकारियों के समक्ष कोई भी व्यक्ति अपनी आवाज नहीं उठा सकता। तिब्बती संस्कृति और सभ्यता विलुप्त प्राय हो चली है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि आज का तिब्बत चीनी अधिग्रहण के चार दशकों के कारण बिल्कुल भिन्न दिखाई देता है। ये सब इतनी स्पष्ट बातें हैं जिन्हें दोहराना व्यर्थ है। यथार्थ तो यह है कि तिब्बत की वर्तमान स्थिति हमें तत्काल किसी निर्णयात्मक कार्यवाही के लिये विवश करती है। परन्तु प्रस्तावित सत्याग्रह को आरंभ करने के पूर्व हमें निम्नलिखित प्रश्नों के विषय में आश्वस्त होना पड़ेगा :-

क. तिब्बत में रहने वाले उन तिब्बतियों से जो चीन के निरंकुश शासन के शिकंजे में हैं हमें क्या सहायता मिल सकती है। ऐसी सहायता सत्याग्रह में सम्मिलित होने, वस्तु और उपकरणों की सहायता एवं नैतिक बल और सहानुभूति की भावना को निरंतर विकसित करने में कहां तक हमारा साथ दे सकती है।

ख. तिब्बत के भीतर सत्याग्रह आन्दोलन किस तरह आरंभ किया जा सकता है? किस तरह वहां सत्याग्रहियों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है?

ग. तिब्बतियों के कौन से समूह (पीढ़ी के क्रम से, विभिन्न क्षेत्रों से, वर्ग एवं उद्यम के विचार से और धर्म के अनुसार) सत्याग्रह में भाग ले सकेंगे?

घ. तिब्बत में किस हद तक सत्याग्रही खुलआम, संकटों की परवाह किये

बगैर हर तरह की कठिनाइयों और मुसीबतों को सहने के लिये प्रस्तुत हो सकेंगे?

2. आन्दोलन-प्रमुख जिस पर आन्दोलन के नेतृत्व का भार होगा

यदि गांधी जी के अनुभवों से प्रस्तावित सत्याग्रह आन्दोलन में कोई मार्ग दर्शन मिल सकता है तो उसके लिये एक प्रमुख संचालक का होना आवश्यक है। भारतीय सत्याग्रह आन्दोलन के गांधी जी सर्वप्रमुख संचालक थे और जैसा कि हम जानते हैं सत्याग्रह उनके दिमाग की ही उपज था। वह उसके प्रचारक, संयोजक, निदेशक और प्रमुख संचालक थे। आन्दोलन प्रमुख के बिना सत्याग्रह आन्दोलन का छेड़ा जाना संभव नहीं है। किसी भी असैनिक, उदार एव न्याय युक्त संघर्ष के लिये एक आदेशात्मक व्यवस्था अनिवार्य है। अतएव प्रस्तावित तिब्बती अहिंसात्मक स्वतंत्रता आन्दोलन के लिये शीर्ष पर प्रमुख संचालक/निकाय की आवश्यकता है। आन्दोलन प्रमुख पर आन्दोलन के संगठन का मुख्य भार होगा। उसके अधिकार क्षेत्र में आन्दोलन के सभी अंग सम्मिलित होंगे, यथा-आन्दोलन की तैयारी, कार्यकर्ताओं का चयन, प्रशिक्षण, रणनीति, प्राथमिकताओं का निर्णय, युक्ति निर्धारण, तात्कालिक निर्णय, संसाधनों का प्रयोग आदि। इस संबन्ध में कुछ मुख्य प्रश्न उठते हैं :

क. सत्याग्रह आन्दोलन को चलाने के लिये क्या परमपावन दलाई लामा की उपस्थिति उपलब्ध हो सकेगी?

ख. वर्तमान स्थिति में क्या उनके लिये यह उचित होगा कि प्रत्यक्ष रुप से वह सत्याग्रह का सूत्र संभालें?

इन प्रश्नों का उत्तर यदि 'हां' हो तो सत्याग्रह के प्रमुख संचालक की समस्या का समाधान हो गया। परन्तु यदि उत्तर 'नहीं' है तो हमारे सामने तीन विकल्प उभरते हैं :

क. परमपावन ही आन्दोलन प्रमुख का चयन कर दें।

ख. परमपावन एक सर्वोच्च निकाय जिसके पांच-छः प्रतिनिधि सदस्य बनाएं जो सहमति से निर्णय ले सकें (बहुमत के आधार पर नहीं)।

ग. यदि ऐसा विचार किया जाय कि परमपावन का सत्याग्रह से पृथक रहना ही उचित होगा (जिनका आशीर्वाद भर प्राप्त होता रहेगा) तो उस दशा में मुख्य तिब्बती प्रतिनिधि और तिब्बती समुदाय विभिन्न वर्गों से चुने गये प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ संयुक्त रुप से मिलकर पांच-छः प्रतिनिधियों का

सर्वोच्च निकाय संगठित करेंगे। उस निकाय में किसी बड़ी संख्या में लोगों का प्रतिनिधित्व नहीं होगा। इस निकाय में तिब्बतियों के निर्वाचित प्रतिनिधि रहें तो और भी अच्छा होगा।

3. एक सुदृढ़ जनमत का निर्माण

एक अहिंसात्मक आन्दोलन के संचालन में सत्याग्रह के पक्ष में एक सुदृढ़ जनमत का होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि बिना सुदृढ़मत के अगर कहीं कोई आन्दोलन उभरता है तो उसे गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सामाजिक स्थिति को जनमत का आधार मिलने से एक व्यापक नैतिक और भौतिक आधार बनता है। यह सच है कि तिब्बत के पक्ष में सारे विश्व की सहानुभूति और सदिच्छा विद्यमान है। जब हम एक अहिंसात्मक आन्दोलन का कार्यक्रम बनाने जा रहे हैं तो उसमें हमें जनता से सुनिश्चित सहयोग प्राप्त करना होगा। अत: यहां प्रश्न यह है कि हम तिब्बत देश के भीतर और बाहर किन तरीकों से अनुकूल और सुदृढ़ जनमत का निर्माण कर सकते हैं। इस दिशा में हमें किस तरह की रणनीति अपनानी होगी और किस तरह के संसाधन और उपाय इस आन्दोलन में प्रयोजनीय होंगे-बुलेटिन, पम्पलेट, पुस्तिकाएं, आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आन्दोलन के संबंध में सूचनाओं का व्यापक प्रसार एवं व्यक्तिगत सुंपर्क व्यवस्था के माध्यम। इन सभी प्रश्नों को प्राथमिकता के आधार पर क्रमश: लेना होगा।

4. उपाय, प्राथमिकताएं एवं रणनीतियाँ

इस संबन्ध में प्रमुख कार्य सत्याग्रह की रुप रेखा का निश्चय करना है जो हमारे लिये हर तरह से उपयुक्त और प्रारंभिक अवस्था में व्यावहारिक हो। इसी के साथ हमें आन्दोलन चलाये जाने से पूर्व उसकी प्राथमिकताओं और रणनीतियों को सुनिश्चित कर लेना होगा। इन सारे कार्यों के लिये बहुत कुछ सोच विचार और योजना पर प्रारंभ में ही ध्यान देना होगा।

5. चयन एवं प्रशिक्षण

प्रत्येक स्वाधीनता आन्दोलन में आत्मसमर्पण की भावना से कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं और स्वयं सेवकों की आवयश्यकता होती है। सत्याग्रह

आन्दोलन उच्चतम नैतिक आदर्शों पर आधारित होता है, अतः उसके लिये ऐसे व्यक्तियों का चयन आवश्यक है जो अपने घोषित सिद्धान्तों का हर दशा में अनुपालन करते रहें। इसलिये यह वांछनीय है कि सत्याग्रही स्वयं सेवकों के प्रवेश के लिये अत्यधिक सावधानी बरती जाए। आन्दोलनकारियों में अधिकतर अपेक्षाकृत तरुणों को लेना चाहिये। (20 से 40 वर्ष) आयुवर्ग के हों। परन्तु यह भी फलदायी सिद्ध हो सकता है कि बड़ी वय वाले स्वयं सेवक भी (40 से 65 वर्ष के बीच के व्यक्ति) आन्दोलन में आगे आयें। इसी तरह सत्याग्रहियों का चयन भी तिब्बती समुदाय के विभिन्न क्षेत्रीय, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अथवा प्रजातीय वर्गों से किया जाय। महिला स्वयं सेविकाओं के प्रवेश के लिय विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। इस तरह आज़ादी के अहिंसात्मक संघर्ष में कार्यकर्ताओं और स्वयं सेवकों की जो सेना संगठित की जायगी उस में समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व होगा।

सत्याग्रहियों के चयन से अधिक महत्व उनके प्रशिक्षण का है। ऐसी दशा में जब कि उन्हें हर परिस्थिति में सत्य, शान्ति और अहिंसा का पालन करना होगा उनके लिये कठोर प्रशिक्षण और समुचित शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। इस संबन्ध में यह विशेष महत्व की बात होगी कि एक सत्याग्रही का जीवन एक उच्च आदर्श के लिये बलिदान और त्याग का जीवन है। स्वयं सेवकों को इस तरह प्रशिक्षित करना होगा जिससे परस्पर बंधुत्व, पवित्रता और आत्मनिर्भरता के साथ सादगी का जीवन व्यतीत कर सकें। उनके लिये रचनात्मक एवं सामुदायिक कार्यों के साथ सामाजिक उत्कर्ष के कार्यक्रमों में भाग लेने की प्रशिक्षण-व्यवस्था भी की जानी चाहिए। संक्षेप में सत्याग्रही स्वयं सेवकों का प्रशिक्षण स्वयं ही एक ऐसा दुस्तर कार्य है जिसमें समुचित योजना, उपयुक्त संसाधन और अध्यवसायी एवं योग्य विद्वानों और प्रशिक्षकों की आवश्यकता है।